शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

वन वीक (7 Days) केप्सूल

आपणी पोथी
वह सब और सिर्फ वही
जो प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछा जाता है।

REET-2021 Level I-II

30/30

EDUCATION PSYCHOLOGY
CHILD DEVELOPMENT AND PEDAGOGY

RTET 2011-12
RTET 2012-13
REET 2015-16
REET 2017-18

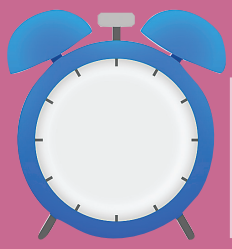

ONE रामबाण
Week Study Capsule

⇒ REET परीक्षा प्लान
⇒ विगत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों का बिंदुवार सटीक विश्लेषण
⇒ परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण तथ्य
⇒ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

डॉ. जे.डी. सिंह
डॉ. सुरेंद्र पाल रॉयल

11 जनवरी 2021 को जारी नवीनतम सिलेबस के अनुसार
NCERT व RBSE की पाठ्यसामग्री पर आधारित

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

वन वीक (7 Days) केप्सूल

लेखक

डॉ. जे.डी. सिंह

एमएससी गणित, एमए अंग्रेजी, एमएड, बीजेएमसी, पीजीडीएचई, यूजीसी नेट, पीएचडी शिक्षा

सह आचार्य ग्रामोत्थान विद्यापीठ स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई)

संगरिया, राजस्थान

मो. : +91 9414577875

ई-मेल: **drjdsingh@gmail.com**

डॉ. सुरेंद्र पाल रॉयल (RES)

एमए (अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, दर्शनशास्त्र), एमएड, सेट,

यूजीसी नेट (दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान), पीएचडी (शिक्षा)

सहायक परियोजना समन्वयक, समसा, हनुमानगढ़, राजस्थान

आपणी पोथी

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

वन वीक (7 Days) केप्सूल

लेखक

डॉ. जे.डी. सिंह

डॉ. सुरेंद्र पाल रॉयल

© आपणी पोथी

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन और इसके किसी भी अंश का किसी भी रूप में फोटो प्रतिलिपि, इलेक्ट्रॉनिकी, यांत्रिकी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से पुनः प्रस्तुतीकरण, प्रतिलिपिकरण, प्रयोग, संग्रहण या प्रसारण नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक

आपणी पोथी

सीकर रोड, नवलगढ़

जिला : झुंझुनूं (राजस्थान) - 333042

संपर्क : 9887803616, 9414362312

Website: www.aapnipothi.com

E-mail: aapnipothi@gmail.com

मुद्रक

कीनो कंप्यूटर ग्राफिक्स

लालकोठी, जयपुर

मूल्य : ₹ 200

पहला संस्करण : 2021

इस पुस्तक के प्रकाशन में पूरी सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी भी त्रुटि से होने वाली क्षति के संबंध में प्रकाशक, मुद्रक, संपादक या लेखक का कोई दायित्व नहीं होगा।

ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तथ्य नई खोजों, अकादमिक स्वीकृतियों और विचारधाराओं के प्रभाव के साथ बदल सकते हैं, इसलिए लेखक, प्रकाशक और मुद्रक इनके सर्वस्वीकृत और निरपेक्ष सत्य होने का दावा नहीं करते।

प्रकाशन के संबंध में किसी भी परिवाद का निपटारा न्यायिक क्षेत्र नवलगढ़ की सक्षम अदालत या फोरम में किया जाएगा।

विषय सूची

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों का युनिट वाईज विश्लेषण
(REET Previous Years Paper Unit-Wise Analysis)

प्रश्न पत्र I & II खण्ड का शीर्षक- बाल विकास एवं शिक्षण विधियां कुल प्रश्न : 30 कुल अंक : 30		RTET 2011-12		RTET 2012-13		REET 2015-16		REET 2017-18		Total	Q. No.
		L1	L2	L1	L2	L1	L2	L1	L2		
Unit-1	बाल विकास, वंशक्रम तथा वातावरण	7	6	5	4	6	7	4	10	**49**	**1-49**
Unit-2	व्यक्तिगत विभिन्नताएं, व्यक्तित्व, बुद्धि	1	2	6	6	5	5	4	6	**35**	**50-84**
Unit-3	विविध अधिगमकर्ताओं की समझ, अधिगम अक्षमता और समायोजन	7	7	5	7	6	5	5	6	**48**	**85-132**
Unit-4	अधिगम, चिंतन और अभिप्रेरणा	6	9	6	6	7	7	10	6	**57**	**133-189**
Unit-5	शिक्षण अधिगम की प्रक्रियाएं	9	6	8	7	6	6	7	2	**51**	**190-240**
	Total Questions	**30**	**30**	**30**	**30**	**30**	**30**	**30**	**30**	**240**	**1-240**

इकाई -1 बाल विकास, वंशक्रम तथा वातावरण
(Child Development, Heredity and Environment) 6-21

1.1 वृद्धि एवं विकास की संकल्पना व विकास के विभिन्न सिद्धांत P7
1.2 विकास के विभिन्न आयाम P9
1.3 विकास की विभिन्न अवस्थाएं P12
1.4 विकास को प्रभावित करने वाले कारक एवं वंशक्रम तथा वातावरण की भूमिका P15
1.5 विकास के विकार P18

इकाई -2 व्यक्तिगत विभिन्नताएं, व्यक्तित्व व बुद्धि
(Individual Differences, Personality and Intelligence) 22-39

2.1 व्यक्तिगत विभिन्नताएं : अर्थ प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक P22
2.2 व्यक्तित्व संकल्पना व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक P24
2.3 व्यक्तित्व के प्रकार P25
2.4 व्यक्तित्व का मापन P26
2.5 मनोविश्लेषण वाद P28
2.6 बुद्धि संकल्पना एवं बुद्धि के सिद्धांत P30
2.7 बुद्धि का मापन P31
2.8 बहुबुद्धि सिद्धांत एवं इसके निहितार्थ P33

इकाई –3 विविध अधिगमकर्ताओं की समझ, अधिगम में आने वाली कठिनाइयां व समायोजन (Understanding diverse learners, Learning Difficulties and Adjustment) 40-57

3.1 पिछड़े बालक P41
3.2 विमंदित बालक और मानसिक स्वास्थ्य P42
3.3 प्रतिभाशाली बालक P44
3.4 सृजनशील बालक P45
3.5 अलाभान्वित और वंचित बालक P46
3.6 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे समावेशी शिक्षा P46
3.7 अधिगम अक्षमता युक्त बच्चे के अधिगम में आने वाली कठिनाइयां P48
3.8 समायोजन की संकल्पना एवं तरीके समायोजन में अध्यापक की भूमिका P50
3.9 रक्षा युक्तियां P52

इकाई –4 अधिगम, चिन्तन और अभिप्रेरणा (Learning, Reflection and Motivation) 58-76

4.1 अधिगम का अर्थ, संकल्पना एवं परिपक्वता P59
4.2 अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक और अधिगम अंतरण P61
4.3 अधिगम के सिद्धांत (व्यवहारवाद) P62
4.4 अधिगम के सिद्धांत (गेस्टाल्टवाद) P66
4.5 अधिगम के सिद्धांत (संज्ञानवाद निर्मितीवाद) P66
4.6 अधिगम की प्रक्रिया, चिंतन, कल्पना एवं तर्क, निर्मितिवाद उपागम, अनुभविक अधिगम, संकल्पना मानचित्रण, अन्वेषण एवं समस्या समाधान P68
4.7 अभिप्रेरणा एवं इसके अधिगम के लिए निहितार्थ P70

इकाई –5 एनसीएफ–2005, शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया व मूल्यांकन (NCF -2005, Teaching Learning Process and Evaluation) 77-96

5.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005 के संदर्भ में शिक्षण अधिगम की व्यूह रचना एवं विधियां P78
5.2 आकलन, मापन एवं मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य, समग्र एवं सतत् मूल्यांकन P81
5.3 उपलब्धि परीक्षण का निर्माण व सीखने के प्रतिफल P85
5.4 क्रियात्मक अनुसंधान P85
5.5 शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009 अध्यापकों की भूमिका एवं दायित्व P88

दो शब्द

प्रिय विद्यार्थियों,

इस पुस्तक का प्रकाशन अल्प समय में सम्पूर्ण विषयवस्तु का दोहराव करते हुए REET की परीक्षा के पैटर्न की समझ विकसित करने के लिए किया गया है।

पुस्तक का प्रयोग करते समय तीन बातों का ध्यान रखें।

(1.) रटने के स्थान पर विषय सामग्री पर अपनी समझ विकसित करें।

(2.) टॉपिक वाईज विगत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति के अनुरूप विषय वस्तु पर अधिक ध्यान देवें।

(3.) प्रतिदिन एक इकाई का अध्ययन करते हुए सात दिवस में पूर्ण पुस्तक का रिवीज़न कर लेवें।

इस पुस्तक की महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रश्नों की सटीक व्याख्या इस प्रकार की गई है कि आगामी परीक्षा में यह पुस्तक आपके प्रदर्शन में सुधार में सहायक सिद्ध होगी।

आपकी सफलता की शुभकामनाओं सहित

लेखक

डा. जे.डी. सिंह
डा. सुरेन्द्र पाल रॉयल

Unit-1

बाल विकास, वंशक्रम तथा वातावरण

(CHILD DEVELOPMENT, HEREDITY AND ENVIRONMENT)

Syllabus

- बाल विकास: वृद्धि एवं विकास की संकल्पना, विकास के विभिन्न आयाम व सिद्धान्त, विकास को प्रभावित करने वाले कारक (विशेष रूप से परिवार व विद्यालय के संदर्भ में) एवं अधिगम से उनका संबंध।
- वंशानुक्रम और वातावरण की भूमिका
- CHILD DEVELOPMENT : CONCEPT OF GROWTH AND DEVELOPMENT, DIMENSIONS AND PRINCIPLES OF DEVELOPMENT. FACTORS AFFECTING DEVELOPMENT (ESPECIALLY IN THE CONTEXT OF FAMILY AND SCHOOL) AND THEIR RELATIONSHIP WITH LEARNING.
- ROLE OF HEREDITY AND ENVIRONMENT.

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों का बिंदुवार विश्लेषण (REET Previous Years Paper Topic-Wise Analysis)

बाल विकास, वंशक्रम तथा वातावरण (Child Development, Heredity and Environment)		RTET 2011-12		RTET 2012-13		REET 2015-16		REET 2017-18		Total
		L1	L2	L1	L2	L1	L2	L1	L2	
1.1	वृद्धि एवं विकास की संकल्पना एवं विकास के विभिन्न सिद्धांत	2	1	1	1	0	0	2	1	**8**
1.2	विकास के विभिन्न आयाम	1	3	1	0	3	2	1	3	**14**
1.3	विकास की विभिन्न अवस्थाएं	4	0	1	2	1	3	0	2	**13**
1.4	विकास को प्रभावित करने वाले कारक एवं वंशक्रम तथा वातावरण की भूमिका	0	2	2	1	2	2	1	1	**11**
1.5	विकास के विकार	0	0	0	0	0	0	0	3	**3**
	Total Questions	**7**	**6**	**5**	**4**	**6**	**7**	**4**	**10**	**49**

1.1 वृद्धि एवं विकास की संकल्पना व विकास के विभिन्न सिद्धांत

1. मात्रात्मक व्यक्तिगत क्षमता रूपी प्रक्रिया को कहा जाता है

(अ) विकास (डेवलपमेंट) (ब) वृद्धि (ग्रोथ)

(स) संतुलन (इक्कीलिब्रियम) (द) परिपक्वता (मेचुरिटी)

Ans. : (ब) (REET 2017-18, L2)

- *वृद्धि (Growth): हमारे शारीरिक पक्ष में किसी अंग का उत्पन्न होना उसके वजन लंबाई रंग रूप में होने वाले मात्रात्मक मापनीय परिवर्तन वृद्धि कहलाते हैं जैसे दांत उगना, दाढ़ी-मूंछ का आना, वजन बढ़ जाना या लंबाई बढ़ जाना इत्यादि।*
- *विकास (Development): यह समय के साथ उक्त परिवर्तनों को इंगित करता है जो केवल मात्रात्मक मापन न होकर अपने को निश्चित व्यवहार पैटर्न (Pattern) प्रतिमान या प्रतिरूप के रूप में व्यक्त करता है, जैसे उदाहरण के तौर पर एक बालक का सामाजिक विकास किसी निश्चित से.मी., इंच या पौंड में आकलित नहीं किया जा सकता अपितु उसकी दूसरों के प्रति की गई प्रतिक्रिया से ही देखा जा सकता है।*
- *परिपक्वता (Maturity): उन परिवर्तनों को इंगित करता है जो एक निर्धारित क्रम का अनुसरण करते हैं तथा प्रधानतः उस आनुवंशिक रूपरेखा (ब्लूप्रिंट) से सुनिश्चित होते हैं। परिपक्वता व्यक्ति के विकास के लिए अधिगम हेतु सामान्य प्रारूप और व्यवहार के क्रम को निर्धारित करती है विकास में परिपक्वता एवं अधिगम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।*
- *संतुलन (Equilibrium): पियाजे के सिद्धांत में एक स्वचालित आरोही प्रक्रिया जो पुरानी और नई- धारणाओं और अनुभवों के बीच संतुलन स्थापित करती है।*

2. निम्न में से कौन सा कथन विकास के बारे में सत्य नहीं है

(अ) विकास अंतः क्रिया का फल है

(ब) विकास एक व्यवस्थित श्रृंखला का अनुगामी हैं

(स) विकास एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है

(द) विकास विशिष्ट से सामान्य की ओर होता है

Ans. : (द) (RTET 2011-12, L2)

विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होता है (Development Proceed from the general to the specific) : जन्म के समय बालक के लिए यह संसार घोर संभ्रमित होता है। शुरू में बालक का अविभेदीकृत व्यवहार अधिक विभेदीकृत, परिष्कृत व्यवहार और लक्ष्य निर्देशित व्यवहार के रूप में विकसित होने लगता है। विकास की सभी दिशाओं में विशिष्ट क्रियाओं से पहले उसके सामान्य रूप के दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिए हाथों से कुछ पकड़ने से पहले बालक इधर उधर वैसे ही हाथ मारने या फैलाने की चेष्टा करता है। बालक का भाषा विकास उसके जन्म के समय रोने से शुरू होता हुआ हावभावों व पहले सामान्य शब्दों से ही होता है। पहले वह सभी व्यक्तियों को माँ कहता है और धीरे-धीरे लगातार भाषा की शब्दावलियों को सीखकर भाषा कौशल का विकास कर लेता है।

3. निम्न में से कौन सा कथन विकास के संबंध में सही नहीं है

(अ) विकास प्रतिमानों की कुछ निश्चित विशेषताओं की भविष्यवाणी की जा सकती है

(ब) विकास का उद्देश्य वंशानुगत संभाव्य क्षमता का विकास करना है

(स) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में संभाव्य खतरे नहीं होते हैं

(द) प्रारंभिक विकास बाद के विकास से अधिक महत्वपूर्ण है।

Ans. : (स) (RTET 2012-13, L1)

विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने जोखिम होते हैं (Each Phase of development has hazards)। विकास की प्रत्येक अवस्था में भौतिक, मनोवैज्ञानिक और वातावरणीय जोखिम रहते है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि अभिभावक और अध्यापक विशिष्ट अवस्था से जुड़े जोखिमों के प्रति जागरूक रहें। ताकि उनसे बालक को बचाया जा सकें। उदहारण के लिए प्रारम्भिक किशोरावस्था अपचार, मादक द्रव्यों का दुरुपयोग, तथा आहार ग्रहण संबंधी विकार अवस्था से जुड़े जोखिम है यह एक अतिसंवेदनशील अवधि है, जिसमें एक किशोर के लिए समकक्षियों का प्रभाव, नयी अर्जित स्वतंत्रता और अनसुलझी समस्याएं उसके लिए अनेक कठिनाइयां उत्पन्न कर सकती हैं। समकक्षियों के दबाव के अनुसार चलना सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही हो सकता है। किशोर प्रायः ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जिसमें सिगरेट, शराब, मादक पदार्थों के सेवन तथा माता-पिता द्वारा बनाए गए नियमों को तोड़ने में वह समकक्षियों के दबाव में आ जाता है। वैलेंटाइन ने किशोरावस्था को अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय बताया है।

4. शुरू में एक बच्चा अपनी पूरी हथेली का उपयोग करके वस्तु को पकड़ता है धीरे-धीरे वृद्धि और विकास के रूप में बच्चा अंगुलियों और अंगूठे का उपयोग वस्तु को उठाने के लिए करता है इस प्रकार की प्रगति है

(अ) सीफेलोकोडल प्रगति

(ब) प्रॉक्सिमोडिस्टल प्रगति

(स) व्यापक से विशिष्ट कार्यवाही प्रगति

(द) अनियमित प्रगति

Ans. : (ब, स) (REET 2017-18, L1)

विकास एक सुव्यवस्थित क्रम में होता है और विकास आनुवंशिक पैटर्न और ब्लूप्रिंट पर आधारित होता है।

आपादीय (सिर से पांव) (Cephalocaudal) विकासः शीर्ष भाग से आरम्भ होकर पादीय (पैर) की ओर जाता है। उदाहरणार्थ- भ्रूण (Fetus) का सिर भाग उसके पैरों से पूर्व विकसित होता है। जन्म के पश्चात भी सिर भाग शरीर के नीचे के भाग से पहले विकास करता है।

भीतर से बाहर की ओर (Proximodistal) विकासः शरीर के केन्द्र भाग से शुरू होकर बाहरी (परिधि) भागों की ओर बढ़ता है। उदाहरणार्थ शिशु पहले पूरे कंधे और फिर कोहनी तत्पश्चात कलाई और अंगुलियों का प्रयोग किसी वस्तु को पकड़ने के लिए करता है इस प्रकार शिशु पहले सम्पूर्ण शरीर तथा बाद में किसी विशेष भाग जैसे - अंगुलियों का काम में लेता है।

गामक (Locomotion) विकासः विश्व के सभी संस्कृतियों में सभी बालकों में गति का विकास भी एक क्रमबद्धता में ही होता है। गति के क्रम बालक पहले बैठना, फिर घुटने चलना तथा बाद में चलना शुरू करता है हालांकि प्रत्येक बालक में इन कार्यों को करने में लगने वाले समय में भिन्नता हो सकती है पर क्रम हमेशा यही रहेगा। इसी प्रकार बालक का भाषा सम्बन्धी विकास भी एक निश्चित क्रम में होता है।

5. **बच्चे के विकास को अक्सर शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक जैसे तीन व्यापक क्षेत्र में विभाजित किया जाता है विकास प्रक्रिया इन क्षेत्रों में कहां तक संबंधित है ?**

(अ) अन्य को प्रभावित किए बिना स्वतंत्र रूप से विकसित

(ब) एक एकीकृत और समग्र प्रकार में विकसित

(स) आंशिक रूप से विकसित (Develop partially)

(द) बेतरतीब ढंग से विकसित (Develop randomly)

Ans. : (ब) (REET 2017-18, L1)

विकास बहुपक्षीय है इन सभी पक्षों में संगठित रूप से एकीकृत परिवर्तन होते हैं जबकि इससे भिन्न वृद्धि में केवल किसी एक विशेष क्षेत्र में परिवर्तन हो सकते हैं। विकास बहु-दिश है अर्थात एक पक्ष में सुदृढ़ता के साथ दूसरे पक्ष में ह्रास एक साथ दृष्टिगोचर हो सकते हैं। उदाहरणार्थ- वृद्धावस्था में शारीरिक क्षरण होता है, वही अनुभवों की सुदृढ़ता भी आती है।

6. **विकास के सन्दर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?**

(अ) विकास की प्रत्येक अवस्था में अपने खतरे है

(ब) विकास उकसाने/बढ़ावा देने से नहीं होता है

(स) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है

(द) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएं होती हैं

Ans. : (ब) (RTET 2011-12, L1)

उकसाने या बढ़ावा देने तथा अधिगम से विकास प्रभावित होता है। यह विकास के लिए उचित अवसर उत्पन्न करने के साथ-साथ इसकी गति को तीव्र करते हैं। उदाहरण के लिए खेल के माध्यम से उत्तेजना बालक के गामक विकास व संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देते हैं। इसी प्रकार आमने सामने की वार्ता से उत्पन्न उत्तेजना बालक के भाषिक विकास को बढ़ावा देती है।

7. **विकास का एक अधिनियम (Principle) है कि विकास प्रतिमान के विभिन्न काल में खुशी भिन्न-भिन्न होती है। इस अधिनियम के अनुसार-**

(अ) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे अधिक खुशी का काल होता है।

(ब) वय सन्धि काल एवं जीवन का प्रथम वर्ष भी जीवन का सबसे अधिक खुशी का काल होता है।

(स) वय सन्धि काल जीवन का सबसे अधिक दुःखी काल होता है।

(द) जीवन का प्रथम वर्ष अधिक खुशी की एवं वय सन्धि काल जीवन का सबसे अधिक दुःखी काल होता है।

Ans. : (द) (RTET2012-13, L2)

विकास की विभिन्न अवधियों में खुशी बदलती रहती है। बचपन सबसे खुशनुमा होता है। जीवन और यौवन की अवधि सबसे दुखी (Childhood is the happiest period of life and puberty is the most unhappy stage) है। खुशी के पैटर्न एक बच्चे से दूसरे बच्चे में भिन्न होते हैं और यह उसके पालन-पोषण की प्रक्रिया से प्रभावित होता है।

8. **विकास का अर्थ है**

(अ) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला

(ब) अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उतरोत्तर श्रृंखला

(स) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उतरोत्तर श्रृंखला

(द) परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उतरोत्तर श्रृंखला

Ans. : (स) (RTET 2011-12, L1)

विकास का अर्थ ''अधिक प्रगति (उन्नति), अधिक प्रकटीकरण (Unfoldment) और अधिक परिपक्वता की ओर जाना है।'' यह समय के साथ उक्त परिवर्तनों को इंगित करता है जो केवल मात्रात्मक मापन न होकर अपने को निश्चित व्यवहार पैटर्न (Pattern) प्रतिमान या प्रतिरूप के रूप में व्यक्त करता है, परिपक्वता और अधिगम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिपक्वता व्यक्ति के विकास के लिए सामान्य प्रारूप और व्यवहार के क्रम को निर्धारित करती है। वहीं अधिगम एक प्रकार का विकास ही है, जो अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोतर श्रृंखला के रूप में होता है।

1.2 विकास के विभिन्न आयाम

9. ..... बाल्यावस्था के दौरान अपने तथा दूसरों के नजरिए में फर्क करने में अयोग्यता को दर्शाता है।

(अ) केंद्रस्थ (Centrism)

(ब) आत्म केंद्रस्थ (Ego Centrism)

(स) जणात्मवाद (Animism)

(द) इनमें से कोई नहीं

Ans. : (ब) (REET 2017-18, L2)

- *आत्मकेन्द्रीयता (Ego Centrism) : बच्चे समझते है कि सारी दुनिया उन्हीं के इर्द गिर्द है। यह भावना दूसरे के विचारों के कार्यों की है, जो अस्वीकृति तथा केवल स्वयं को ही सही मानने से संबंधित है। यह पूर्व सम्प्रत्यात्मक अवधि (Pre-conceptional period) 2 से 4 वर्ष की विशेषता है।*
- *जीववाद (Animism) : पियाजे के अनुसार 4 वर्ष तक के बच्चे सभी निर्जीव वस्तुओं को सजीव प्राणियों के रूप में देखते और समझते है इसे जीववाद (Animism) कहा गया है। उदाहरणार्थ, जब एक बालक सड़क पर गिर जाता है तो वह गुस्से में आकर सड़क को पीटता है, सूर्य बहुत गुस्से में है और चंदा मामा जैसे उदाहरण हैं। यह पूर्व सम्प्रत्यात्मक अवधि (Pre-conceptional period) 2 से 4 वर्ष की विशेषता है।*
- *केंद्रस्थ की प्रवृत्ति (Trend of centrism) : पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था के विचार की एक अन्य विशेषता बच्चों में केंद्रीकरण की प्रवृत्ति, अर्थात एक घटना को समझने के लिए किसी एक विशेषता या पक्ष पर ध्यान देना, से परिभाषित होती है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा 'बड़े गिलास' में जूस पीने की जिद्द कर सकता है, एक छोटे चौड़े गिलास की तुलना में एक लंबे व पतले गिलास को वरीयता देता है, जबकि दोनों ही गिलास में समान मात्रा में जूस रहता है। अर्थात उसे आकार, द्रव्यमान आदि का संज्ञान नहीं होता है। यह अंतर्दर्शी अवस्था (Intuitive Period) 4 से 7 वर्ष की विशेषता है।*

10. बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। यह अवस्था है

(अ) 7 से 12 वर्ष तक

(ब) 12 से वयस्क तक वर्ष तक।

(स) 2 से 7 वर्ष तक

(द) जन्म से 2 वर्ष तक

Ans. : (अ) (RTET 2011-12, L2)

जीन पियाजे (Jean Piaget) के संज्ञानात्मक विकास की तीसरी अवस्था मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational) : 7 से 11 वर्ष बाल्यावस्था (Childhood) School Age कक्षा 1 से 5वीं तक बच्चा मूर्त घटनाओं के संबंध में युक्तिसंगत तर्क कर सकता है और वस्तुओं को विभिन्न समूहों में वर्गीकृत कर सकता है। वस्तुओं की मानस प्रतिमाओं पर परिवर्तनीय मानसिक संक्रियाएं करने में सक्षम होता है।

11. निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्त्व नहीं है?

(अ) सामाजिक संचरण (ब) अनुभव

(स) सन्तुलनीकरण (द) उक्त में कोई नहीं।

Ans. : (अ) (RTET 2011-12, L2)

पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत और ज्ञान-मीमांसीय दृष्टिकोण के योग को 'आनुवंशिक ज्ञान-मीमांसा' (Genetic epistemology) कहा जाता है। वहीं वाइगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत बताता है कि सामाजिक संपर्क संज्ञानात्मक विकास के लिए मौलिक है।

12. उत्तर बाल्यवस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्त्व में परिवर्तन समझने लगते हैं?

(अ) द्रव्यमान (ब) द्रव्यमान और संख्या

(स) संख्या (द) द्रव्यमान,संख्या और क्षेत्र

Ans. : (द) (RTET 2011-12, L1)

- *पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की तीसरी मूर्त संक्रियात्मक अवस्था : 7 से 11 वर्ष बाल्यावस्था (Childhood) School Age कक्षा 1 से 5वीं तक बालक दो विशेषताओं को प्रकट करता है-*
- *कंजर्वेशन (Conservation) : कंजर्वेशन से अभिप्राय है जब कोई ज्ञान जो पदार्थ (Matter) रूप मे बदल जाने के बाद भी मात्रा (Mass), संख्या (Number), भार (Weight) तथा आयतन (Volume) की दृष्टि से समान तथा अपरिवर्तित रह जाता है, उसे कंजर्वेशन कहा जाता है। यह क्षमता 7 से 12 वर्ष के अधिकांश बच्चों में पाई जाती हैं।*
- *उत्क्रमणीयता (Reversibility) : बालक में यह समझ विकसित हो जाती है कि कुछ क्रियाएं एक दूसरे की उल्टी होती हैं। जैसे- व्यकलन योग की उत्क्रमणीय प्रक्रिया है।*

13. 'एक विशेष स्तर पर बच्चे मौलिक तर्क का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं तथा सभी प्रकार के प्रश्नों का जवाब जानना चाहते हैं।' पियाजे ने इसे 'अंतर्ज्ञान' (Intuition) कहा है। पियाजे के अनुसार, निम्न में से कौनसे चरण का यह अर्थ है?

(अ) साकार संचालन (Concrete Operation)

(ब) पूर्व-संचालन (Pre-operation)

(स) औपचारिक संचालन (Formal Operation)

(द) उपर्युक्त कोई भी नहीं

Ans. : (ब) (REET 2017-18, L2)

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
(Piaget's Theory of Cognitive Development, 1936)

क्र. सं.	अवस्था (Stage)	उम्र (Age)	अवस्था का विवरण (Description)	विकासात्मक घटना (Developmental Phenomena)
1.	संवेदी गामक (Sensory Motor Stage)	जन्म से 2 वर्ष	संवेदी इन्द्रियों व क्रियाओं द्वारा बाह्य जगत को अनुभव करना (देखना, सुनना, छूना, सूंघना, होठ हिलाना, हाथ-पैर हिलाना आदि)	वस्तु स्थायित्व (Object Permanence) का विकास अजनबी चिंता (Stranger anxiety) विलंबित अनुकरण जिज्ञासा की उत्पत्ति
2.	पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)	2-7 वर्ष	तार्किक चिंतन की बजाय अन्तर्दृष्टि का प्रयोग करते हुए शब्दों व चित्रों को प्रस्तुत करना प्रतिकात्मक विचारों का विकास (Symbolic Thoughts) अनुत्क्रमणीयता (Irreversibility)	कल्पना करना (Imagination) भाषा कौशल (Language Skills) समस्या समाधान योग्यता का विकास आत्मकेंद्रिता (Ego Centrism) जीवात्म (Animism) दिखावा करना (Pretend Play) सकर्मक तर्कणा (Transductive Reasoning) केन्द्रण (Centration/Concentration) उल्टी क्रिया में असमर्थता (Inability to Reverse Operation)
3.	मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage)	7-11 वर्ष	मूर्त घटनाओं के बारे में तार्किक चिंतन (Concrete Logical Thinking) का विकास मूर्त संक्रियात्मक विचार (Concrete Operational Thought) संज्ञानात्मक नक्शे बनाने की क्षमता	संरक्षण (Conservation) वर्गीकरण (Classification) क्रमबद्धता (Seriation) विकेन्द्रण (Decentration), गणितीय रूपान्तरण प्रतिवर्त्यता/उलटने पलटने की योग्यता/उत्क्रमणीयता (Reversibility)
4.	औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)	11 से 18 वर्ष	महत्वपूर्ण घटनाओं या अमूर्त विचारों के बारे में तार्किक चिंतन (Abstract-Logical Thinking) का विकास आदर्शवादी सोच समझ का स्थानांतरण उच्च स्तरीय संतुलन संबंधात्मक व योजनाबद्ध चिंतन	अमूर्त तार्किक चिंतन (Abstract logical thinking) निगमनात्मक चिंतन (Deductive thinking) सादृश्यात्मक चिंतन (Analogical thinking) परिकल्पनात्मक चिंतन (Hypothetical thinking) चिंतनशील क्षमताएं (Reflective abilities)

14. संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है (Sensation is a Gateway of Knowledge)। यह कथन -

(अ) मानसिक विकास है (ब) शारीरिक विकास है

(स) ध्यान का विकास है (द) भाषा का विकास है

Ans. : (अ) (REET 2015-16, L2)

किसी विशेष ज्ञानेंद्रिय (Sense) द्वारा किसी उद्दीपक या वस्तु का प्रारंभिक अनुभव संवेदना (Sensation) कहलाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अनेक भौतिक उद्दीपकों का पता लगाते हैं। हमारी ज्ञानेंद्रियों द्वारा ग्रहण की गई सूचनाएं ही हमारे समस्त ज्ञान का आधार बनती हैं। हमारे आस-पास के जगत का ज्ञान तीन प्रमुख प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है - संवेदना (Sensation), अवधान (attention) तथा प्रत्यक्षीकरण (perception)। ये प्रक्रियाएं एक दूसरे से अत्यधिक अंतर्संबंधित होती हैं, इसलिए इन्हें अधिकांशतः एक ही प्रक्रिया - संज्ञान के विभिन्न अंशों के रूप में समझा जाता है।

15. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है ..... की आयु पर।

(अ) 7 वर्ष (ब) 11 वर्ष

(स) 9 वर्ष (द) 6 वर्ष

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L1)

व्याख्या के लिए अगला प्रश्न देखें।

16. ..... की अवस्था तक बालक की दृष्टि एवं श्रवण इंद्रियां पूर्ण विकसित हो जाती हैं।

(अ) 3 अथवा 4 वर्ष (ब) 6 अथवा 7 वर्ष

(स) 8 अथवा 9 वर्ष (द) इनमें से कोई नहीं

Ans. : (स) (REET 2015-16, L1)

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की तीसरी अवस्था मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7 से 11 वर्ष) के आरम्भ में ही बालक की दृष्टि एवं श्रवण इंद्रियां पूर्ण विकसित हो जाती हैं। इस अवस्था के अंत तक बालक में तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है।

17. फ्रायड, पियाजे एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तिगत विकास की विभिन्न अवस्थाओं के संदर्भ में व्याख्या की है। परन्तु पियाजे ने -

(अ) कहा कि विकास की अवस्थाएं वातावरण से निर्धारित होती हैं।

(ब) कहा कि शैशवावस्था के अनुभव ही अधिक प्रभावित करते हैं, बाकी अवस्थाओं के सीमित प्रभाव होते हैं।

(स) विभिन्न अवस्थाओं को समझाने के लिए संज्ञानात्मक बदलाव के बारे में कहा।

(द) इनमें से कोई नहीं।

Ans. : (स) (RTET 2011-12, L2)

विभिन्न अवस्थाओं को समझाने के लिए संज्ञानात्मक बदलाव के बारे में पियाजे, ब्रूनर तथा वायगोत्स्की का महत्वपूर्ण योगदान है, जबकि फ्रायड मनोविश्लेषण सिद्धान्त का जनक है। फ्रायड ने मनोलैंगिक विकास (Psychosexual Development) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

18. गामक विकास (Motor Development) से हमारा तात्पर्य मांसपेशियों के विकास से तथा पैरों के उचित उपयोग-

(अ) मस्तिष्क और आत्मा (Brain and Soul)

(ब) अधिगम और शिक्षा

(स) प्रशिक्षण और अधिगम

(द) शक्ति और गति (Power and Speed)

Ans. : (द) (REET 2015-16, L2)

क्रियात्मक या पेशीय विकास (Motor development): *क्रियात्मक विकास से तात्पर्य मांसपेशियों, तंत्रिकाओं एवं तंत्रिका केंद्रों के समन्वित क्रियाओं द्वारा शारीरिक गति, जैसे- चलने, खेलने, दौड़ने लिखने, बोलने आदि पर नियंत्रण पाने से होता है।*

19. शारीरिक विकास का क्षेत्र है-

(अ) स्नायु मंडल (ब) मांसपेशियों की विधि

(स) एंडोक्राइन ग्लैन्ड्स (द) उपयुक्त सभी।

Ans. : (द) (REET 2015-16, L1)

शारीरिक विकास (Physical development): *विकासात्मक मनोवैज्ञानिक बच्चों के शारीरिक विकास का अध्ययन भी विस्तृत ढंग से करते हैं। शारीरिक विकास से तात्पर्य बच्चों के उम्र के अनुसार शारीरिक आकार, शारीरिक अनुपात, हड्डियों, मांसपेशियों, अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों एवं स्नायुमंडल (nervous system) के समुचित विकास से होता है। जीवन की प्रारंभिक अवस्था में शारीरिक विकास पर अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह विकास के अन्य पक्षों से अंतःक्रिया करते हुए उन्हें आधार प्रदान करता है।*

20. निम्नलिखित में से कौन सूक्ष्म चलन कौशल का उदाहरण है?

(अ) चढ़ना (ब) कूदना

(स) दौड़ना (द) लिखना

Ans. : (द) (REET 2017-18, L2)

सूक्ष्म पेशीय कौशल (Fine motor skills) : *ऐसा विकास जिसमें बालक अपने भुजाओं, पैरों तथा अन्य पेशियों का उपयोग अधिक विश्वास तथा उद्देश्यपूर्ण ढंग से करता है। उदाहरणार्थ- ब्लॉक बनाना, तर्जनी एवं अँगूठे की सहायता से वस्तुओं को उठाना, आँख की गति के साथ अंगों को समन्वित करना। इसके अलावा उछलना, कूदना, दौड़ना आदि भी स्थूल गामक-कौशल (Gross motor skills) हैं।*

21. नौ वर्ष के बालक की नैतिक तर्कणा आधारित होती है:

(अ) किसी कार्य के भौतिक परिणाम उसकी अच्छाई या बुराई को निर्धारित करते हैं

(ब) कोई कार्य सही होना इस बात पर निर्भर करता है कि उससे व्यक्ति की अपनी आवश्यकता पूर्ति होती है

(स) नियमों का पालन करने के बदले में कुछ लाभ मिलना चाहिए

(द) सही कार्य वह है जो उस व्यक्ति द्वारा किया जाए जो अन्य व्यक्तियों को अपने व्यवहार से प्रभावित करता है

Ans. : (अ) (RTET 2012-13, L1)

कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक तर्कणा में प्रगति तीन चरणों, जो आयु सम्बन्धी होते हैं, उसमें संज्ञानात्मक विकास के द्वारा निर्धारित होती है।

कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत की आलोचना करते हुए गिलीगिन ने देखभाल वाली नैतिकता का सिद्धांत प्रतिपादित किया। गिलीगिन का मानना है कि कोहलबर्ग का सिद्धांत पुरुषों की तरफदारी करता है। क्योंकि केवल पुरुषों का ही नैतिक आचरण न्याय और नियम पर आधारित हो सकता है। महिलाओं का नैतिक आचरण मुख्यतः देखभाल की प्रवृत्ति पर आधारित होता है।

22. एरिक्सन के अनुसार, बच्चों का मनोसामाजिक विकास आठ चरणों में होता है। एक कक्षा 3 का छात्र (9 साल के आसपास)

विकास के किस चरण से मेल खाता है?

(अ) शर्मिंदगी बनाम संदेह के मुकाबले की स्वायत्तता

(ब) परिश्रम बनाम हीनता

(स) नेतृत्व बनाम अपराध

(द) अंतरंगता बनाम अलगाव

Ans. : (ब) (REET 2017-18, L1)

एरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धान्त की मान्यता है कि विकास की प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति संघर्षो का सामना करता है जो परिवर्तन को स्वीकार करके और अनुकूलन द्वारा दूर किये जा सकते हैं। एरिक्सन ने व्यक्तित्व के तीन कारकों यथा- शरीर, अहम और समाज या संस्कृति के प्रभाव को पहचाना। उसके अनुसार व्यक्तित्व विकास इन तीनों कारकों के प्रभाव स्वरूप होता है। एरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास की प्रत्येक अवस्था में तीन आर (Erikson Three R's) होते हैं जो क्रम से विकसित होते हैं, यथा- 1. कर्मकांडता (Ritualization), 2. कर्मकांड (Ritual), 3. कर्मकांडवाद (Ritualism)। इस प्रकार यह सिद्धान्त सामाजिक, मानवशास्त्रीय और जैविक कारकों का व्यक्तित्व में एकीकरण पर बल देता है। एरिक्सन की मनोसामाजिक सिद्धान्त की अवस्थाओं का वर्णन निम्नानुसार है-

क्रम सं.	*विकास अवस्था (Stages of Development)*	*मनोसामाजिक संकट/संक्रांति (Psychosocial Crisis)*	*मूलभूत गुण (Basic Virtue)*	*उम्र (Age)*
1.	*शैशवावस्था (Infancy)*	*विश्वास बनाम अविश्वास (Trust Versus Mistrust)*	*आशा (Hope)*	*0 - 2*
2.	*प्रारंभिक बाल्यावस्था (Early Childhood)*	*स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता (Autonomy Versus Shame)*	*इच्छा (Will)*	*2 - 3*
3.	*खेल अवस्था (Play Age)*	*पहल शक्ति बनाम दोषिता (Initiative Versus Guilt)*	*लक्ष्य (Purpose)*	*3 - 5*
4.	*स्कूल अवस्था (School Age)*	*परिश्रम बनाम हीनता (Industry Versus Inferiority)*	*सामर्थ्यता (Competency)*	*5 - 12*
5.	*किशोरावस्था (Adolescence)*	*अहम् पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति (Ego Identity Versus Role Confusion)*	*निष्ठा (Fidelity)*	*12 - 18*
6.	*तरुण वयस्कावस्था (Early Adulthood)*	*घनिष्ठता बनाम विलगन (Intimacy Versus Isolation)*	*प्यार (Love)*	*18 - 40*
7.	*मध्य वयस्कावस्था (Middle Adulthood)*	*जननात्मकता बनाम स्थिरता (Generativity Versus Stagnation)*	*देखरेख (Care)*	*40 - 65*
8.	*परिपक्वता (Maturity)*	*अहम् संपूर्णता बनाम निराशा (Ego Integrity Versus Despair)*	*बुद्धिमत्ता (Wisdom)*	*65+*

1.3 विकास की विभिन्न अवस्थाएं

23. इस अवस्था को मिथ्या-परिपक्वता (Pseudo Maturity) का समय भी कहा जाता है

(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था

(स) किशोरावस्था (द) प्रौढ़ावस्था

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L2)

जे.एस. रॉस : बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता का काल कहा है।

कोल एवं ब्रूस : बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा है।

किलपैट्रिक : बाल्यावस्था को प्रतिद्वंद्वात्मक समाजीकरण का काल कहा है।

ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन : शैक्षिक दृष्टिकोण से बाल्यावस्था से अधिक जीवन में कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है।

24. शैशवावस्था की विशेषता नहीं है-

(अ) शारीरिक विकास की तीव्रता

(ब) दूसरों पर निर्भरता

(स) नैतिकता का होना

(द) मानसिक विकास में तीव्रता

Ans. : (स) (REET 2015-16, L2)

शैशवावस्था नैतिक विकास की दृष्टि से शून्यावस्था है। हैविंगर्स्ट व जीन पियाजे के अनुसार शैशवकाल नैतिक विकास की दृष्टि से पूर्व नैतिक अवस्था (Anomy Stage) है।

हैविंगर्स्ट के अनुसार नैतिक विकास की अवस्थाएं

शैशव (इनफैन्सी) (Infancy stage :0-3 Yrs)	पूर्व नैतिक अवस्था (Pre-moral stage)
पूर्व बाल्यावस्था (3-6 वर्ष) प्री-स्कूल (Early childhood)	स्व केंद्रित अवस्था (Self centered stage)
बाल्यावस्था (6-12 वर्ष) (Childhood)	परंपराओं को धारण करने की अवस्था (Confirming conventional stage)
पूर्व किशोरावस्था (12-16 वर्ष) (Pre adolescence period)	आधारहीन आत्म चेतना की अवस्था (Irrational Conscientious Stage)
उत्तर किशोरावस्था (16-20 वर्ष) (Post adolescence period)	आधार युक्त आत्म चेतना की अवस्था (Rational Conscientious Stage)

25. इस अवस्था में बालकों में नई खोज करने की और घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है

(अ) शैशव

(ब) उत्तर बाल्यकाल

(स) किशोरावस्था

(द) प्रौढ़ावस्था

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L1)

उत्तर बाल्यकाल मानव जीवन के लगभग 6 से 12 वर्ष की आयु का वह काल है, जिसमें बालक के जीवन में स्थायित्व आने लगता है और वह आगे आने वाले जीवन की तैयारी करता है। बाल्यावस्था की यह आयु शिक्षा आरम्भ करने के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इस अवस्था की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं-

- *प्रबल जिज्ञासा प्रवृत्ति (Strong curiosity): बाल्यावस्था में जिज्ञासा की प्रवत्ति बहुत तीव्र हो जाती है। वह अपनी जिज्ञासा को शान्त करने माता पिता व घर के अन्य सदस्यों से प्रश्न पूछता है। शैशवास्था में उनके प्रश्नों की प्रकृति क्या तक सीमित रहती है, परन्तु बाल्यावस्था में वह 'क्यों' और 'कैसे' भी जानना चाहता है।*
- *खेल आयु (Play Age) : स्ट्रेंग के अनुसार ऐसा शायद ही कोई खेल हो जिसे 10 वर्ष का बालक नहीं खेलता हो। इस अवस्था में बालक में यौन भेद का भाव विकसित हो जाता है। इसलिए वह केवल समलिंगी समूह में ही रहना और खेलना अधिक पसंद करता है।*
- *विधायकता: यह बालक में मूर्त प्रकार की सृजनात्मकता का एक प्रकार है, जिसमें वह अनेक तरह की वस्तुओं के उपयोग खेल सामग्री के रूप में करने में सक्षम होता है।*
- *संग्रह की प्रवृत्ति: बाल्यावस्था रुचि उत्पन्न होने के लिए सर्वोत्तम अवस्था है। बालक विभिन्न प्रकार के डाक टिकट, चित्र इत्यादि का संग्रह करता है।*
- ***निरुद्देश्य भ्रमण** करने की प्रवृत्ति।*

26. 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते है

(अ) धर्म में

(ब) मानव शरीर में

(स) यौन सम्बंध में

(द) विद्यालय में

Ans. : (द) (RTET 2011-12, L1)

उत्तर बाल्यकाल मानव जीवन के लगभग 6 से 12 वर्ष की आयु का वह काल है जो बालक की शिक्षा आरंभ करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। अतः इसे आरंभिक विद्यालय की आयु (Elementary School Age) कहते हैं।

ब्लेयर, जॉन्स व सिंपसन : शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन चक्र में बाल्यावस्था से महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नहीं है।

27. दल या गैंग का सदस्य होने से समाजीकरण उत्तर बाल्यावस्था में बेहतर होता है। निम्न में से कौनसा कथन इस विचार के विपरीत है?

(अ) वयस्कों पर निर्भर न होकर सीखता है

(ब) जिम्मेदारियों को निभाना सीखता है

(स) अपने समूह के प्रति वफादार होना सीखना है

(द) छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हुए, अपने गैंग के सदस्यों से लड़ाई मोल लेता है

Ans. : (द) (RTET 2012-13, L1)

दल या गैंग आयु (Gang Age) : इस अवस्था में बच्चा सामाजिक अभियोजन (social adjustment) करना भी सीख लेता है। छह वर्ष की उम्र के करीब से 'समाजीकरण' (Socialisation) का स्थान महत्त्वपूर्ण रहता है। 6 से 11 वर्ष की अवस्था को गैंग एज (Gang Age) या दल की अवस्था कहते हैं। इस अवस्था का बच्चे के जीवन में बहुत महत्त्व है। क्योंकि वह सामूहिक भावना की प्रबलता, सामाजिक गुणों का विकास तथा जिम्मेदारियों को निभाना सीखता है।

28. निम्न में से कौन सा विकासात्मक कार्य उत्तर बाल्यावस्था के उपयुक्त नहीं है?

(अ) सामान्य खेलों के लिए आवश्यक शारीरिक कुशलताएं सीखना

(ब) पुरूषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना

(स) वैयक्तिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना

(द) अपने हम उम्र बालकों के साथ रहना सीखना

Ans. : (ब) (RTET 2011-12, L1)

विकासात्मक मनोविज्ञान (डेवलपमेंटल साइकोलॉजी) एक वैज्ञानिक अध्ययन है, जो मनुष्य के जीवन में हो रहे परिवर्तन के बारे में बताता है। विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक जीन पियाजे को माना जाता है।

विकासात्मक कार्य: *एक व्यक्ति की विशेष उम्र की सामाजिक जरूरतों को विकास कार्य के रूप में जाना जाता है। विकासात्मक कार्य निश्चित अवधि में उत्पन्न सामाजिक अपेक्षायें हैं। हैविगर्स्ट (Havighurst) प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने विभिन्न आयु वर्गों के विकासात्मक कार्यों की पहचान की है। पुरूषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना किशोरावस्था का विकासात्मक कार्य है।*

29. वय सन्धि काल में निम्न में से कौन बाह्य अभिव्यक्ति नहीं है-

(अ) प्रभुता/सत्ता के विपरीत विरोध

(ब) अशान्ति

(स) आत्मनिर्भरता के प्रति आग्रही

(द) सक्रिय खेलों के स्थान पर बैठे रहकर खेलना अधिक पसंद

Ans. : (द) (RTET 2012-13, L2)

वयः संधि काल (Puberty Age) किशोरावस्था के पूर्व की अवस्था (Pre-adolescence) को कहते है। यह अवस्था बाल्यावस्था किशोरावस्था को मिलाने के सेतु का कार्य करती है। लड़कियों में साधारणतः यह अवस्था 11-13 वर्ष के बीच होती है और लड़कों में इसके लगभग एक वर्ष बाद आती है। इस अवस्था को बुहलर (Buhler) ने निषेधात्मक अवस्था (Negative Phase) कहा है।

30. निम्न में से कौन सा कथन मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के विकास से सहमति नहीं रखता-

(अ) सामाजिक व्यवहार उत्तरोतर समवयस्क समूह के आदर्शो से प्रभावित होता है।

(ब) इस अवस्था में अधिकांश बालक तीव्र गति से वृद्धि प्राप्त नहीं करते।

(स) बौद्धिक एवं सामाजिक व्यवहार पर स्व-प्रभाविता का महत्तवपूर्ण प्रभाव होता है।

(द) अधिकांश विद्यार्थी विशेष रूप से स्वकेन्द्रित हो जाते हैं।

Ans. : (ब) (RTET 2012-13, L2)

- *मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थी की विकास अवस्था यानि पूर्व-किशोरावस्था (Pre-adolescence) में लगभग 11 से 14 वर्ष की आयु का बालक होता है।*
- *इस अवस्था में अधिकांश बालक तीव्र गति से वृद्धि प्राप्त करते हैं। यौवनारंभ या लैंगिक परिपक्वता बाल्यावस्था के अंत को तथा किशोरावस्था के प्रारंभ को इंगित करती है, जो संवृद्धि दर एवं लैंगिक विशेषताओं दोनों में ही आकस्मिक परिवर्तनों के द्वारा परिभाषित होती है।*
- *किशोर भी एक विशिष्ट प्रकार का अहंकेंद्रवाद विकसित करते हैं। डेविड एलकाईंड (David Elkind) के अनुसार काल्पनिक श्रोता (imaginary audience) एवं व्यक्तिगत दंतकथा (personal fable) किशोरों के अहंकेंद्रवाद के दो घटक हैं।*

31. 'खिलौने की आयु' (Toy Age) कहा जाता है

(अ) पूर्व बाल्यवस्था को (ब) उत्तर बाल्यवस्था को

(स) शैशवावथा को (द) ये सभी

Ans. : (अ) (RTET 2011-12, L1)

- *शैशवावस्था (इनफैन्सी) (Infancy stage) : 0 - 3 वर्ष*
- *आरंभिक शैशवावस्था (Early infancy) : 0 - 1.5 वर्ष*
- *उत्तर शैशवावस्था (Late infancy) : 1.5 - 3 वर्ष*
- *आरंभिक बाल्यावस्था (Early childhood) : (3-6 वर्ष प्री-स्कूल आयु)*
- *उत्तर बाल्यावस्था (Late Childhood) : (6-12 वर्ष प्राथमिक स्कूल आयु)*

32. निम्न में से कौन-सी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?

(अ) दल/समूह में रहने की अवस्था (Pre Gang Age)

(ब) अनुकरण करने की अवस्था (Imitative Age)

(स) प्रश्न करने की अवस्था Questioning Age)

(द) खेलने की अवस्था (Play Age)

Ans. : (द) (RTET 2011-12, L1)

आरंभिक बाल्यावस्था (Early childhood) (3-6 वर्ष) : प्री-स्कूल की अवस्था को कहते हैं। मनोविश्लेषणवाद विचारक सिगमंड फ्रायड ने इस अवस्था को बालक का निर्माण काल माना है। फ्रायड ने कहा है कि बालक को जो कुछ बनना है वह उसके जीवन के प्रारंभिक 5 वर्षों में निर्धारित हो जाता है।

33. 'बीसवीं शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा जाता है।' यह परिभाषा दी है

(अ) मुर्रे (ब) एडलर

(स) क्रो व क्रो (द) जेबी वाटसन

Ans. : (स) (REET 2015-16, L2)

एडलर *ने मानव को एक व्यक्ति के रूप में संपूर्ण माना, जिसे उसने अपने मनोविज्ञान को 'व्यक्तिगत मनोविज्ञान' कहा है। एडलर के विचार से प्रत्येक व्यक्ति अपर्याप्तता और अपराध की भावनाओं से ग्रसित होता है। इसे हम हीनता मनोग्रंथि (inferiority omplex) के नाम से जानते हैं, जो बाल्यावस्था में उत्पन्न होती है।*

हेनरी मुर्रे *(नवफ्राइडवादी) द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के आवश्यकता सिद्धांत में प्रेरणा को एक ऐसा गत्यात्मक बल*

माना गया है, जो व्यक्ति को एक निश्चित व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

***जेबी वाटसन** (9 जनवरी, 1878 - 25 सितंबर, 1958) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने व्यवहारवाद के मनोवैज्ञानिक स्कूल की स्थापना की। वाटसन का यह कथन कि यदि उन्हें एक दर्जन भी स्वस्थ बच्चे दिये जाते हैं तो वे उन्हें चाहे तो डाक्टर, इंजीनियर, कलाकार या भिखारी कुछ भी उचित वातावरण प्रदान कर बना सकते हैं, ने वातावरण की भूमिका पर विशेष प्रकाश डाला।*

34. किशोरावस्था में एक बच्चे के उचित विकास हेतु माता-पिता तथा शिक्षक निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं:

(अ) लिंग शिक्षा का उचित ज्ञान देना

(ब) उचित वातावरण प्रदान करना

(स) परामर्श तथा मार्गदर्शन सेवा की व्यवस्था करना (यदि आवश्यक हो)

(द) उपर्युक्त सभी

Ans. : (द) (REET 2017-18, L2)

पाश्चात्य मनोविज्ञान ने इसे टीनएज (Teen Age) की संज्ञा दी है, यह बाल विकास की सबसे जटिल अवस्था है। स्टैनले हॉल ने इसे दबाव, तनाव और तूफान की अवस्था कहा है। इस अवस्था में बालक को अहस्तक्षेपनीय सहयोग की सर्वाधिक आवश्यकता होती है।

ब्लेयर, जोन्स और सिम्पसन (Blair, Jones & Simpson) के मतानुसार किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत से आरंभ होता है और प्रौढ़ावस्था के आरंभ में समाप्त होता है।

एफ. ए. क्रिकपैट्रिक (F.A. Kirkpatrick) के शब्दों में इस बात में कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।

35. ज्यादातर बच्चे प्रथम सार्थक शब्द इस उम्र में बोलते हैं:

(अ) 3 महीने में (ब) 6 महीने में

(स) 35-40 महीने में (द) 10-13 महीने में

Ans. : (द) (REET 2017-18, L2)

1 माह: बालक अपने सिर पर नियंत्रण कर पाता है।

2 माह: पेट के बल लेटे होने पर छाती ऊपर उठाना।

3 माह: पेट के बल लेट होने पर सिर उठाने का प्रयास करना, अपने नेत्र गोलक पर नियंत्रण कर पाता है।

4 माह: सहारे के साथ बैठना।

5 से 6: माह का बालक हाथ पैरों को गति देना सीखता है।

7 माह: गोद में बैठना।

8 माह: बिना सहारे के साथ बैठना, बालक का मेरुदंड पर नियंत्रण।

11- 12 माह: खड़े होकर चलना और बोलना प्रारम्भ।

1.4 विकास को प्रभावित करने वाले कारक एवं वंशक्रम तथा वातावरण की भूमिका

36. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है?

(अ) अभिभावक एवं अध्यापक का

(ब) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का

(स) वंशक्रम एवं वातावरण का

(द) इनमें से कोई नहीं।

Ans. : (स) (RTET 2011-12, L2)

मानव का विकास अनेक कारकों द्वारा प्रभावित होता है, जिनमें से दो प्रमुख हैं- प्रथम उसकी प्रकृति (Nature) या जेविक और दूसरा है व्यक्ति का संवरण या पोषण (Nurture)। व्यक्ति की प्रकृति जन्मजात होती है यह उसे उसके माता पिता एवं पूर्वजों से प्राप्त होती है जिसे उसका वंशक्रम कहते हैं। व्यक्ति के विकास को संवरण (पोषित) करने वाले कारक उसके वातावरण के अन्तर्गत आते हैं। व्यक्ति का विकास उसके गर्भकाल से आरम्भ हो जाता है, जो उसके माता पिता द्वारा प्रदत्त वंशक्रम से निर्धारित होता है और जन्म के पश्चात् समाज में मिला वातावरण उसका आगे का विकास निर्धारित करता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास उसके वंशक्रम तथा वातावरण की अन्तःक्रिया का परिणाम है।

37. एक बच्चा जो कि एक विशेषता (जैसे मौखिक क्षमता) में उच्च या निम्न है, बाद की उम्र में भी रहेगा। यह बयान के महत्व पर जोर देता है

(अ) प्रारंभिक अनुभव (ब) वातावरण

(स) आनुवंशिकता (द) आनुवंशिकता व वातावरण दोनों

Ans. : (स) (REET 2017-18, L1)

बालक अधिकांशतः रंग, रूप, आकृति, विद्वता आदि में अपने पूर्वजों एवं माता-पिता से मिलता जुलता होता है। यानि उसे अपने माता पिता के शारीरिक और मानसिक गुण प्राप्त होते हैं। जैसे माता-पिता है, वैसी ही उनकी सन्तान होती है। इसी को हम वंशानुक्रम, आनुवांशिकता, पैतृकता, वंश परम्परा (Heredity) आदि नामों से पुकारते हैं। वंशानुक्रम को व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग कहा जा सकता है।

बालक का वंशानुक्रम या प्रकृति के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि उसका विकास किस सीमा तक या किस दिशा में होगा। तय सीमा से बाहर विकास संभव नहीं है। जैसे- उल्लू तैर नहीं सकता और मछली उड़ नहीं सकती।

वंशानुक्रम का व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक विकास

पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

आनुवंशिकता की भूमिका लगभग स्थिर-सी रहती है, जबकि परिवेश का प्रभाव परिवर्तित हो सकता है।

विकास का ब्ल्यूप्रिंट, दिशा व दायरा आनुवंशिकता से निर्धारित होता है।

38. संज्ञानात्मक विकास में वंशक्रम निर्धारित करता है

(अ) मस्तिष्क जैसी शारीरिक संरचना के मूलभूत स्वभाव को

(ब) शारीरिक संरचना के विकास को

(स) सहज प्रतिवर्ती क्रियाओं के अस्तित्व को

(द) इनमें से सभी

Ans. : (अ) (RTET 2012-13, L1)

संज्ञानात्मक विकास -

- *मानसिक विकास का एक घटक है।*
- *वंशक्रम के स्थान पर वातावरण से अधिक प्रभावित होता है।*
- *वंशक्रम केवल मस्तिष्क जैसी शारीरिक संरचना के मूलभूत स्वभाव को निर्धारित करता है।*
- *संज्ञानात्मक विकास बदलती परिस्थितियों में शीघ्रता से समझ विकसित करना है। जैसे-जैसे बच्चों की अधिसंज्ञानात्मक क्षमताएं विकसित होती हैं, वे अपनी आस्थाओं के प्रति अधिक जागरूक होते जाते हैं और इस तरह अपने सीखने को स्वयं नियंत्रित व नियमित करने में सक्षम हो जाते हैं।*

39. निम्न में से कौनसा वंशानुक्रम का नियम नहीं है?

(अ) समानता (ब) भिन्नता

(स) प्रत्यागमन (द) अभिप्रेरणा

Ans. : (द) (REET 2015-16, L1)

वंशक्रम कुछ नियमों तथा सिद्धान्तों पर आधारित है। वंशक्रम के सर्वाधिक प्रचलित नियम निम्नलिखित हैं-

1. बीजकोष की निरन्तरता का नियम (Law of Continuity of Germ Plasm)

2. समानता का नियम (Law of Reseblance)

3. विभिन्नता का नियम (Law of Variation)

4. प्रत्यागमन का नियम (Law of Regression)

5. अर्जित गुणों के स्थानान्तरण का नियम (Law of Trasmission of Acquired Traits)

6. प्रभाविकता एवं वियोग का नियम (Law of Dominance and Segregation)

40. मनुष्य जीवन का आरंभ मूलतः घटित है

(अ) दो कोष (Two Cells) (ब) केवल एक कोष

(स) कई कोष (Many Cells) (द) कोई कोष नहीं

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L2)

मानव शरीर कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। इसी शरीर का आरम्भ केवल एक कोशिका से होता है जिसे संयुक्त कोष (Zygote) कहते हैं। यह जाइगोट दो उत्पादक कोशिकाओं (Germ Cells) का योग होता है, जिसमें एक कोशिका पिता की जिसे पित कोशिका (Sperm) और दूसरी माता की होती है जिसे मातृकोशिका (Ovum) कहते हैं। माता और पिता की प्रत्येक कोशिका में 23-23 गुणसूत्र (Chromosomes) होते हैं और ये मिलकर संयुक्त कोशिका (Zygote) में गुणसूत्रों के 23 जोड़े बनाते हैं।

41. आनुवंशिकता की इकाई है-

(अ) क्रोमोसोम (ब) निषेचित अंडा

(स) जीन (द) युग्मज

Ans. : (स) (REET 2017-18, L2)

आनुवंशिकता की मूल इकाई जीन (Genes) है जो गुणसूत्रों पर विद्यमान होते हैं, जिसमें उसके वंश की असंख्य परम्परागत विशेषताएं निहित होती हैं।

42. वातावरण वह बाहरी शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है, किसने कहा था ?

(अ) वुडवर्थ (ब) रॉस

(स) एनास्ट्सी (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L1)

रॉस : ''वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।''

टी.पी. नन : ''व्यक्ति के लिए जीवन की परिस्थितियां वही महत्व रखती है, जो समुद्री जहाजों के लिए चट्टान, समुद्र की लहरें तथा तेज हवाएं।''

वुडवर्थ : ''वातावरण में सब बाह्य तत्व आ जाते हैं, जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरम्भ करने के समय से प्रभावित किया है।''

जिस्बर्ट : ''वातावरण वह हर वस्तु है जो किसी अन्य वस्तु को घेरे हुए है और उस पर सीधे अपना प्रभाव डालती है।''

43. व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की -

(अ) नाममात्र की भूमिका है (ब) महत्त्वपूर्ण भूमिका है

(स) अपूर्वानुमेय भूमिका है। (द) आकर्षक भूमिका है।

Ans. : (अ) (RTET 2011-12, L2)

वंशक्रम मानव को विकसित होने की क्षमताएं प्रदान करता है। इन क्षमताओं को विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते हैं। अतः व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की नाममात्र की भूमिका है। क्योंकि वातावरण का मानव की जन्मजात शक्तियों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। उपयुक्त वातावरण के अभाव में जन्मजात शक्तियां अविकसित रह जाती है, चाहे वे शारीरिक शक्तियां हो अथवा मानसिक।

बुद्धि पर प्रभाव

- *गोर्डन का मत है कि उचित सामाजिक और सांस्कृतिक*

वातावरण न मिलने के कारण मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है। अलग अलग वातावरण में रहने से रामू भेड़िये का केस, अमाला और कमाला का केस, काशपर हौजर का केस आदि के उदाहरणों से यह सिद्ध हो जाता है कि उचित वातावरण न मिलने से बौद्धिक विकास की गति बहुत धीमी हो जाती है और उचित वातावरण मिलने से बौद्धिक विकास की गति तेज हो जाती है।

- *गॉडार्ड का विचार है कि तीव्र बुद्धि माता-पिता की सन्तान तीव्र बुद्धि और मन्दबुद्धि माता-पिता की संतान मन्द बुद्धि होती है। अनेक परिवारों का इतिहास बुद्धि पर वंशानुक्रम के इस प्रभाव को दर्शाता है। उसने यह बात कालीकॉक नामक सैनिक के वंशजों का अध्ययन करके सिद्ध की।*

व्यक्तित्व पर प्रभाव

- *कूले का मत है कि व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति अच्छे वातावरण में रहकर व्यक्तित्व का निर्माण करके महान बन सकता है। व्यक्ति का चरित्र भी काफी सीमा तक वातावरण पर ही निर्भर करता है। वातावरण बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक व अध्यात्मिक विकास के सभी पक्षों पर प्रभाव डालता है। एक बालक जितने अधिक समय अच्छे वातावरण में रहता हे, वह उतना ही अधिक इस वातावरण की ओर अग्रसर होता है। इसी प्रकार खराब वातावरण में रहने से उसकी प्रवृत्ति अवगुणों की तरफ मुड़ जाती है। भारत में भी रविन्द्रनाथ ठाकुर की विश्वभारती जैसे संस्था ने सन्थाल लोगों को शिक्षा देकर सुयोग्य नागरिक बनाया है।*
- *गाल्टन के अनुसार व्यक्ति की महानता का कारण उसका वंशानुक्रम है। व्यक्ति का कद, वर्ण, वंशज, स्वास्थ्य, बुद्धि, शक्तियां आदि उसके वंशानुक्रम पर आधारित रहते हैं। यह विचार उसने महान न्यायाधीशों, राजनीतिज्ञों, सैनिक पदाधिकारियों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन करने के पश्चात रखे।*

44. मेरडिथ (Meredith) के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य रूप से उन परिवारों के बालक ..... होते हैं, जो सामाजिक स्तर से ऊंचे होते हैं।

(अ) कम स्वस्थ एवं विकसित

(ब) अधिक स्वस्थ एवं विकसित

(स) अधिक स्वस्थ एवं कम विकसित

(द) स्वस्थ नहीं पर विकसित

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L2)

सामाजिक व्यवहारों का विकास पर प्रभाव यद्यपि शैशवावस्था से ही आरंभ हो जाता है, परन्तु बाल्यावस्था में, सामाजिक विकास के स्वरूपों में गुणात्मक तथा मात्रात्मक परिवर्तन तीव्रतर गति से परिलक्षित होने लगते हैं।

45. कुपोषण के प्रभाव के बारे में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है ?

(अ) जीवन के बाद के वर्षो में यह मस्तिष्क की कोशिकाओं को प्रभावित करता है।

(ब) यह बालको की सीखने की योग्यताओं को प्रभावित करता है।

(स) बालक निराश एवं आशंकित रहते हैं।

(द) यह कद को प्रभावित करता है।

Ans. : (अ) (RTET 2012-13, L2)

व्यक्ति के सामान्य विकास के लिए पुष्टिकर और संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन में व्यक्ति विकास के सभी आवश्यक तत्व पाए जाने आवश्यक है अन्यथा शारीरिक दुर्बलता और रोग उसके विकास में बाधक बन सकते हैं। सही भोजन व्यक्ति को सभी अवस्थाओं में आवश्यक होता है परन्तु शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था में इसकी अनिवार्यता अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

46. निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है?

(अ) जो अध्यापक यह विश्वास करता है कि विकास प्रकृति की वजह से होता है, वह अनुभव प्रदान करने को महत्व नहीं देता

(ब) प्रारंभिक अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और अध्यापक का हस्तक्षेप भी महत्वपूर्ण होता है

(स) प्रारंभिक जीवन की नकारात्मक घटनाओं के प्रभाव से कोई भी अध्यापक बचाव नहीं कर सकता

(द) व्यवहारात्मक परिवर्तन के संदर्भ में विकास वातावरणीय प्रभावों के फलस्वरूप होता है।

Ans. : (स) (RTET 2012-13, L1)

मानव विकास में वंशानुक्रम और वातावरण के प्रभाव को पृथक नहीं किया जा सकता है। अपितु ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। बालक के विकास में वंशानुक्रम का अधिक महत्व है या वातावरण का अधिक महत्व हे, इस प्रश्न का उत्तर हम अभी तक नहीं खोज पाये हैं। परन्तु परीक्षण और अवलोकनों के आधार पर बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण के सापेक्षिक महत्व को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है-

- *वंशानुक्रम व वातावरण की अपृथकता (Nonseparation of Hereditory and environment)*
- *वंशानुक्रम व वातावरण का समान महत्व (Equal importance of Herediotry and Environment)*
- *वंशानुक्रम व वातावरण की पारस्परिक निर्भरता (Inter dependence of Hereditory and environment)*
- *वंशानुक्रम व वातावरण के प्रभावों में अन्तर करना असम्भव है (Differentation is impossible between hereditary and environment's effect)*
- *मानव, वंशानुक्रम व वातावरण की उपज है (Human is the creation of hereditary and environment)।*

1.5 विकास के विकार

47. किशोरावस्था की ऐसी आदत जिसमें खुद को भूखे रखने की प्रवृत्ति होती है तथा यह ज्यादा बालिकाओं में पाई जाती है। ऐसी अवस्था को कहा जाता है:

(अ) एनोरेक्सिया नरवोसा (Anorexia Nervosa)

(ब) डेलीरियम ट्रेमेंस (Delirium Tremens)

(स) स्वलीनता (Autism)

(द) डाउन सिंड्रोम (Down Syndrome)

Ans. : (अ) (REET 2017-18, L2)

एनोरेक्सिया नरवोसा (Anorexia Nervosa): खाने से संबंधित एक विकार है, जो वजन घटाने (या बढ़ते बच्चों में उचित वजन बढ़ने की कमी) की विशेषता है। एनोरेक्सिया वाले लोग आमतौर पर कैलोरी की संख्या और उनके द्वारा खाए जाने वाले भोजन के प्रकार को प्रतिबंधित करते हैं। विकार वाले कुछ लोग भी अनिवार्य रूप से व्यायाम करते हैं।

बुलिमिया या क्षुधतिशयता (Bulimia): आहार ग्रहण संबंधी विकार का एक दूसरा प्रकार है जिसमें व्यक्ति अत्यधिक भोजन करने का एक ऐसा प्रारूप अपनाता है। इसमें वह स्वादिष्ट भोजन करता रहता है और उसके बाद अपने प्रयास से वमन करके अथवा किसी विरेचक का उपयोग करके उसका विरेचन कर देता है और बीच-बीच में उपवास भी रखता है। एनोरेक्सिया नरवोसा तथा बुलिमिया मुख्य रूप से महिलाओं के विकार हैं, जो शहरी परिवारों में अधिक पाए जाते हैं।

डेलीरियम ट्रेमेंस (Delirium Tremens): चित्तविभ्रम अर्थात् डेलीरियम मानसिक संभ्रांति की उस उग्र अवस्था को कहते हैं जिसमें अचेतना, अकुलाहट, प्रलाप और उत्तेजना होती है। इसमें असंबद्ध विचारों के साथ साधारण भ्रम और मतिभ्रम के मायाजाल मस्तिष्क की स्वाभाविक चेतना को धूमिल कर देते हैं। सर्व प्रथम इसे 1813 में वर्णित किया था, जिसे डी.टी. के नाम से भी जाना जाता है।

डाउन सिंड्रोम (Down Syndrome): शारीरिक विकास का अनुवांशिक डिसऑर्डर है। यह एक तरह की मानसिक मंदता है जो अनुवांशिकता के कारण उत्पन्न होती है। 21 जोड़े गुणसूत्र में एक अतिरिक्त गुणसूत्र डाउन सिंड्रोम रोग का कारण है। यह अभिवृद्धि और विकास का विकार है।

48. निम्न में से कौनसे स्वलीनता (Autism) के लक्षण हैं?

(अ) कमजोर सामाजिक व्यवहार (ब) रूढ़िबद्ध व्यवहार

(स) कमजोर संप्रेषण (द) उपर्युक्त सभी

Ans. : (द) (REET 2017-18, L2)

स्वलीनता (Autism) -

- *यह सामाजिक विकास से संबंधित विकार है।*
- *यह बाल्यावस्था और किशोरावस्था से संबंधित विकार है।*
- *इसकी सबसे पहले पहचान एक यूक्रेनी अमेरिकी मनोचिकित्सक लियो कैनर (Leo Kanner) ने की थी।*
- *यह दूसरों से मेलजोल करने में कठिनाई से संबंधित है।*
- *ऐसे बालकों का संप्रेषण कमजोर होता है।*
- *यह विकार लड़कियों के मुकाबले लड़कों में होने की संभावना 4 गुना अधिक होती है।*
- *यह सामाजिक संप्रेषण एवं सामाजिक अंतः क्रिया में स्थाई कमी है।*
- *इसमें सामाजिक भावनात्मक वैचारिक संप्रेषण में कठिनाई होती है।*
- *अच्छी बुद्धि वाला व्यक्ति भी स्वलीन हो सकता है।*
- ***टीच** (TEACCH- Treatment and Education of Autistic and Communication related handicapped children) व **पीईसीएस** (PECS- Picture Exchange Communication System) जैसे कार्यक्रम ऑटिज्म बालकों के शिक्षण हेतु प्रयोग किये जाते हैं।*

49. एक पांच वर्ष के बच्चे में दूसरों के प्रति प्रतिक्रिया तथा संप्रेषण में कमी है तथा असामान्य व्यवहार को बारंबार करता है। इस तरह के लक्षण किस चीज का प्रतीक हैं?

(अ) श्रवण बाधिता (ब) शैक्षिक पिछड़ापन

(स) शैशव स्वलीनता (द) अधिगम अक्षमता

Ans. : (स) (REET 2017-18, L2)

शैशव स्वलीनता मुख्यतः सामाजिक विकास का विकार है। इस विकार से ग्रसित बालक के व्यवहार की महत्वपूर्ण विशेषताएं इस प्रकार हैं-

- *दोहराए जाने वाले व्यवहार जैसे- हाथ फड़फड़ाना, हिलना, कूदना या मरोड़ना।*
- *आक्रामक व्यवहार, स्वयं के साथ और दूसरों के साथ भी।*
- *समन्वय की कमी।*

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण तथ्य

विकास की विशेषताएं

- विकास परिवर्तनों की श्रृंखला है, जो परिपक्वता अनुभव आनुवंशिकता और वातावरण के फलस्वरूप उत्तरोत्तर निश्चित पैटर्न (Pattern) पर चलती रहती है।
- विकास में वृद्धि और ह्रास दोनों शामिल हैं अर्थात मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों परिवर्तन शामिल है।
- वे समस्त परिवर्तन जो मानव को अपनी अगली अवस्था में लेकर जाने में सहायक होते हैं, विकास से संबंधित है।

उदाहरण के लिए वृद्धावस्था में शरीर का होने वाला क्षरण विकास का संकेत है।

- विकास की प्रक्रिया में मुख्य रूप से चार प्रकार के परिवर्तन होते हैं- (1) आकार में परिवर्तन (2) अनुपात में परिवर्तन (3) पुरानी रूपरेखा में परिवर्तन (4) नई गुणों की प्राप्ति।
- विकास प्रक्रिया और उत्पाद दोनों हैं।
- विकास लम्बवत न होकर वर्तुलाकार होता है।
- विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होता है।
- विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है।
- बालक एवं बालिकाओं में विकास की दर में भिन्नता होती है।
- विकास संचयी होता है।

विकास के महत्वपूर्ण सिद्धांत

- जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
- कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत
- सिगमंड फ्रायड का लैंगिक विकास का सिद्धांत
- एरिक्सन का मनोसामाजिक विकास का सिद्धांत
- वाइगोत्स्की का सामाजिक सांस्कृतिक विकास सिद्धांत
- चोम्स्की का भाषा विकास का आनुवांशिक सिद्धांत
- जॉन बॉल्बी का लगाव सिद्धांत (Bowlby's Attacment theory)
- गिलीगिन की देखभाल वाली नैतिकता का सिद्धांत (Gilligan's Moral development theory)

(1.) पियाजे का डेकलेज सिद्धांत

- **डेकल आयु (Decalage) :** डेकल आयु जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की तीसरी अवस्था यानि मूर्त संक्रियात्मक अवस्था का लक्षण है। यह मूर्त विषय में संज्ञान के स्थानांतरण के अभाव का द्योतक है। डेकल आयु दो प्रकार की होती है- होरिजेंटल डेकल आयु तथा वर्टिकल डेकल आयु।
- **होरिजेंटल डेकल आयु (Horizontal Decalage)** में जो संक्रिया बालक किसी एक समस्या से कर सकता है वही संक्रिया **उसी समान दूसरी परिस्थिति** में प्रयोग नहीं कर पाता है।
- **वर्टिकल डेकल आयु (Vertical Decalage)** में जो संक्रिया बालक किसी एक समस्या से कर सकता है वही संक्रिया **दूसरी कठिन परिस्थिति** में नहीं कर पाता है।

(2.) एरिक्सन का अंह पहचान का सिद्धांत

- **इगो आइडिंटीटी (Ego Identity)** यौवनारंभ की अवस्था में संवृद्धि की तीव्रता संबंधी एक महत्वपूर्ण घटना है, जिसमें प्रजनन संबंधी परिपक्वता तथा गौण लैंगिक लक्षण अंतर्निहित हैं। एरिक्सन के अनुसार पहचान निर्माण की ओर अग्रसर होना किशोरों की एक मुख्य चुनौती है। ब्लेयर, जोन्स और सिम्पसन के अनुसार किशोर महत्वपूर्ण बनना अपने समूह में स्थिति प्राप्त करना और श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहता है।

(3.) स्टेनले हॉल का आकस्मिक विकास सिद्धांत : किशोरावस्था पर विशेष कार्य अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जी.स्टेनले हॉल (G.Stanley Hall 1846-1924) का है। वे अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ के प्रथम अध्यक्ष एवं शिक्षाविद् थे। इन्हें किशोरावस्था पर अत्यधिक खोजबीन के कारण किशोरावस्था का पिता (G. Stanley Hall : Father of Adolescence) कहा जाता है। स्टेनले हॉल ने वर्ष 1904 में किशोरावस्था के 'आकस्मिक विकास' का प्रसिद्ध सिद्धांत दिया, जिसे किशोरावस्था के सम्बन्ध में त्वरित विकास का सिद्धांत भी कहा जाता है। इनके अनुसार किशोरावस्था के लक्षण 14 से 24 तक होते हैं। उन्होंने इसे तूफान और तनाव की अवस्था (Storm- stress) की अवस्था मानी है। उन्होंने इसे चरम सीमाओं के बीच दोलन की अवस्था भी कहा है (Swing between extremes)। जैसे, कभी संगी-साथियों से घिरे रहना तो कभी अकेले रहना पसंद करना, अच्छा बनना चाहना और बुरी पसंद करना। किशोरावस्था बच्चे से तर्कसंगत वयस्क (Children to rational adults) बनने की अवस्था भी उन्होंने कहा है।

(4.) युरी ब्रॉनफेनब्रेनर (Urie Bronfenbrenner) : युरी ब्रानफेनब्रेनर ने बाल विकास के अध्ययन का पारिस्थितिकीय मॉडल दिया है। यह परिस्थितिपरक दृष्टिकोण व्यक्ति के विकास में परिवेशीय कारकों की भूमिका पर अधिक बल देता है।

- **लघु मंडल (Microsystem) :** वह निकटतम परिवेश है जिसमें व्यक्ति रहता है। यही वह परिवेश है जिसमें बच्चा सामाजिक कारकों या एजेन्टों जैसे- परिवार, साथी-सहयोगी, अध्यापक, एवं पड़ोस से प्रत्यक्ष रूप से अंतःक्रिया करता है।
- **मध्य मंडल (Mesosystem) :** लघु मंडल के इन परिवेशों के मध्य संबंध मध्य मंडल के अंतर्गत आते हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चे के माता-पिता अध्यापकों से कैसे संबंध स्थापित करते हैं, या माता-पिता किशोर के मित्रों को किस रूप में देखते हैं, ये ऐसे अनुभव हैं जो एक व्यक्ति के दूसरों से संबंध को प्रभावित करने वाले हैं।
- **बाह्य मंडल (Exosystem) :** इसके अंतर्गत सामाजिक परिवेश की वे घटनाएं आती हैं जहां बच्चा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिभागिता नहीं करता है, परंतु वे तात्कालिक परिस्थिति में बच्चे के अनुभव को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, माता या पिता का स्थानांतरण माता-पिता में तनाव उत्पन्न कर सकता है जो बच्चे के साथ उनकी अंतःक्रिया अथवा बच्चे को उपलब्ध सामान्य सुख-सुविधाएं जैसे- विद्यालयी पठन-पाठन, पुस्तकालयी सुविधाएं, चिकित्सीय देख-रेख, मनोरंजन के साधन आदि की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।
- **बृहत् मंडल (Macrosystem) :** इसके अंतर्गत वह संस्कृति, मूल्य कानून आदि आते हैं, जिसमें व्यक्ति रहता है। व्यक्ति के विकास में संस्कृति का बहुत महत्त्व हैं।
- **घटना मंडल (chronosystem) :** इसमें व्यक्ति के जीवन-क्रम की घटनाएं तथा उस काल की सामाजिक-ऐतिहासिक परिस्थितियां, जैसे- माता-पिता का तलाक या आर्थिक आघात एवं बच्चों पर उनका प्रभाव आदि निहित हैं।

(5.) दुर्भीति (Phobia) : इसका तात्पर्य कुछ ऐसी वस्तु या परिस्थिति के प्रति अत्यधिक या अनुपयुक्त भय से है, जो वास्तव में खतरनाक नहीं होती हैं। दुर्भीति की मुख्य तीन श्रेणियां होती हैं -

- विवृति भीति (Agoraphobia) में व्यक्ति अपरिचित स्थितियों में प्रवेश करने के भय से ग्रसित हो जाते हैं। इसलिए जीवन की सामान्य गतिविधियों का निर्वहन करने की उनकी योग्यता भी अत्यधिक सीमित हो जाती हैं।
- सामाजिक दुर्भीति (Social phobia) में व्यक्ति दूसरों के साथ अंतःक्रिया तथा वैसी सामाजिक परिस्थिति में जाने से डरता है जहाँ वह समझता है कि उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।
- विशिष्ट दुर्भीति (Specific phobia) में व्यक्ति विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति से काफी डरता है। जैसे कुछ लोग विशेष तरह के पशु, पक्षी, बीमारी आदि से काफी डरते हैं।

यौन (Sex) पुरुष या महिला होने के जैविक आयाम को बताता है जबकि लिंग (Gender) महिला या पुरुष होने के सामाजिक आयाम को इंगित करता है।

परीक्षा पैटर्न पर आधारित अभ्यास प्रश्न

निम्नांकित में से कौनसा नवजात शिशु के 'रिफ्लैक्स' (Reflexes) का एक प्रकार नहीं है ?

(अ) आंख झपकाना (Eye Blink)

(ब) चूसना (Sucking)

(स) तैरना (Swimming)

(द) कार चलाना (Driving Car)

Ans. : **(द)**

सहपाठियों का दबाव जब सबसे अधिक प्रभाव डालता है, वह है

(अ) प्रारंभिक बाल्यावस्था (ब) मध्य बाल्यावस्था

(स) प्रारंभिक किशोरावस्था (द) उत्तर किशोरावस्था

Ans. : **(द)**

सोलह वर्षीय नीरज अपने आप में पृथक् स्वनियंत्रित व्यक्ति की भावना को विकसित करने का प्रयास कर रहा है। वह विकसित कर रहा है-

(अ) नियमों के प्रति घृणा (ब) स्वायत्तता

(स) किशोरावस्थात्मक अक्खड़पन (द) परिपक्वता

Ans. : **(ब)**

'प्रकृत्ति-पालन-पोषण' वाद विवाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनो में से कौनसा आपको उपयुक्त प्रतीत होता है?

(अ) एक बच्चा एक खाली स्लेट के समान होता है जिसको चरित्र परिवेश के द्वारा किसी भी आकार में ढाला जा सकता है

(ब) एक बच्चे के व्यवहार का निर्धारण करने में परिवेशीय प्रभावों अनुर्वशिक रूप से निर्धारित होता है

(स) वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक-दूसरे से गुथे हुए है और दोनों विकास को प्रभावित करते है

(द) बच्चे आनुर्वंशिक रूप से उस तरफ प्रवृत्त होते है जिस तरह होना चाहिए, इससे कोई फर्क नही पड़ता है कि वे किस प्रकार के परिवेश में पल-बढ़ रहे हैं।

Ans. : **(स)**

ब्रॉनफेनब्रेनर (Urie Bronfenbrenner) के परिस्थितिकीय तंत्र के सिद्धांत के अनुसार बच्चे को उपलब्ध सामान्य सुख-सुविधाएं जैसे- विद्यालयी पठन-पाठन, पुस्तकालयी सुविधाएँ, चिकित्सीय देख-रेख, मनोरंजन के साधन आदि क्षेत्र में समाहित है।

(अ) लघु मंडल (Microsystem)

(ब) मध्य मंडल (Mesosystem)

(स) बाह्य मंडल (Exosystem)

(द) बृहत् मंडल (Macrosystem)

Ans. : **(स)**

निम्नांकित में से किस दृष्टिकोण की यह मान्यता है कि बाल विकास एक सतत् प्रक्रिया नहीं है ?

(अ) पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

(ब) व्यवहारवाद

(स) सामाजिक अधिगम सिद्धांत

(द) पारिस्थितिकीय तंत्र (Ecological System) सिद्धांत

Ans. : **(अ)**

मस्तिष्क के प्री-फ्रंटल कॉर्टेक्स द्वारा निम्नांकित में से कौनसा कार्य नियंत्रित नहीं होता है ?

(अ) शारीरिक परिचालन (Body Movement)

(ब) चिंतन (Thinking)

(स) समस्या समाधान (Problem Solving)

(द) दृष्टि एवं श्रवण (Vision and Hearing)

Ans. : **(स)**

कोहलबर्ग के अनुसार, सही और गलत के प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन प्रक्रिया को कहा जाता है

(अ) नैतिक यथार्थवाद (ब) नैतिक दुविधा

(स) सहयोग की नैतिकता (द) नैतिक क्रिया

Ans. : **(ब)**

वाइगोत्स्की की संस्तुति के अनुसार बच्चों की व्यक्तिगत वाक् (Personal speech) की संकल्पना

(अ) प्रदर्शित करती है कि बच्चे अपने आप से प्यार करते है

(ब) स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने ही कार्यो के निर्दशन के लिए भाषा का उपयोग करते है

(स) प्रदर्शित करती है कि बच्चे बुद्ध होते है इसलिए उन्हें प्रौढ़ो

के निर्देशन की आवश्यकता होती है

(द) स्पष्ट करती है कि बच्चे अहं-केन्द्रित होते है।

Ans. : **(ब)**

संवेग का एक सिद्धांत जिसके अनुसार शारीरिक परिवर्तन तथा संवेग की अनुभूति एक साथ घटित होती है।

(अ) जेरोम सिंगर सिद्धांत (Jerome Singer theory)

(ब) स्टैनली शैक्टर सिद्धांत (Stanley Schachter theory)

(स) जेम्स-लैंग सिद्धांत (James-Lange theory)

(द) कैनन-बार्ड सिद्धांत (Cannon-Bard theory)

Ans. : **(द)**

मानव विकास है

(अ) मात्रात्मक (ब) गुणात्मक

(स) कुछ सीमा तक अमापनीय (द) अ और ब दोनों

Ans. : **(द)**

मस्तिष्क का वजन हमारे शरीर के कुल भार का ---- प्रतिशत है

(अ) 2.35 (ब) 3.35

(स) 10.2 (द) 5.7

Ans. : **(अ)**

वे परिवर्तनों जो एक निर्धारित क्रम का अनुसरण करते हैं तथा आनुवंशिक रूपरेखा (ब्लूप्रिंट) से सुनिश्चित होते हैं, को इंगित करता है-

(अ) परिपक्वता (Maturation)

(ब) संवृद्धि (Growth)

(स) विकास (Development)

(द) क्रमविकास (Evolution)

Ans. : **(अ)**

यह कथन 'तुम मेरी पीठ खुजाओ, मैं तुम्हारी खुजाऊंगा', निम्नांकित में से किस प्रकार की नैतिकता की ओर इंगित करता है? जैसा कि पियाजे ने बताया :

(अ) सहयोग की नैतिकता का आरंभ

(ब) पूर्व रूढ़िवादी नैतिकता

(स) वास्तववाद

(द) नैतिकता से कोई संबंध नहीं है

Ans. : **(अ)**

निम्नलिखित में से कौन विकास के व्यापक आयामों की सही पहचान करता है -

(अ) सामाजिक, शारीरिक, व्यक्तित्व, स्व (Self)

(ब) शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक

(स) संवेगात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं स्व

(द) शारीरिक, व्यक्तित्व, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक

Ans. : **(ब)**

पांच साल का एक बच्चा यह तर्क नहीं कर पाता कि जब पानी को ऊंचे और संकरे गिलास से चौड़े बर्तन में डाला जाता है तो पानी की मात्रा उतनी ही रहती है। ऐसा इसलिए होता है कि :

(अ) वह प्रतीक नहीं बना पाता

(ब) वह अनुकरण नहीं कर पाता

(स) वह वैपर्ययी चिंतन (Reverse Thinking) नहीं कर सकता

(द) उसका व्यवहार उद्देश्योन्मुखी नहीं होता

Ans. : **(स)**

समाजीकरण एक प्रक्रिया (Process of Socialization) है :

(अ) मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित करने की

(ब) घुलने-मिलने तथा समायोजन की

(स) एक समाज की संस्कृति की आलोचना करना सीखने की

(द) मित्रों के साथ सामाजिक बनने की

Ans. : **(अ)**

बच्चों के समाजीकरण (Socialization of Children) में निम्नलिखित में से किसकी भूमिका नहीं है?

(अ) विद्यालय (School)

(ब) परिवार (Family)

(स) भौतिक आधारभूत संरचना (Physical Infrastructure)

(द) मीडिया (Media)

Ans. : **(स)**

निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही नहीं है?

(अ) वृद्धि एवं विकास दो अलग आयाम हैं

(ब) वृद्धि जीवनपर्यंत चलती है

(स) वृद्धि विकास की प्रक्रिया का ही एक भाग है

(द) विकास सतत प्रक्रिया है

Ans. : **(ब)**

Unit-2

व्यक्तिगत विभिन्नताएं, व्यक्तित्व व बुद्धि

(INDIVIDUAL DIFFERENCES, PERSONALITY AND INTELLIGENCE)

Syllabus

- व्यक्तिगत विभिन्नताएं: अर्थ, प्रकार व व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक।
- व्यक्तित्व: संकल्पना, प्रकार व व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक। व्यक्तित्व का मापन।
- बुद्धि: संकल्पना, सिद्धान्त व इसका मापन, बहुबुद्धि सिद्धान्त और इसके निहितार्थ।
- INDIVIDUAL DIFFERENCES: MEANING, TYPES AND FACTORS AFFECTING INDIVIDUAL DIFFERENCES.
- PERSONALITY: CONCEPT AND TYPES OF PERSONALITY, FACTORS RESPONSIBLE FOR SHAPING IT. ITS MEASUREMENT.
- INTELLIGENCE : CONCEPT, THEORIES AND ITS MEASUREMENT. MULTIPLE INTELLIGENCE. ITS IMPLICATION.

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों का बिंदुवार विश्लेषण (REET Previous Years Paper Topic-Wise Analysis)

व्यक्तिगत विभिन्नताएं, व्यक्तित्व व बुद्धि (Individual Differences, Personality and Intelligence)		RTET 2011-12		RTET 2012-13		REET 2015-16		REET 2017-18		Total
		L1	L2	L1	L2	L1	L2	L1	L2	
2.1	व्यक्तिगत विभिन्नताएं : अर्थ प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक	0	0	1	2	1	1	0	1	6
2.2	व्यक्तित्व संकल्पना व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक	0	0	1	1	1	0	0	0	3
2.3	व्यक्तित्व के प्रकार	0	0	1	0	1	1	0	0	3
2.4	व्यक्तित्व का मापन	0	1	0	1	0	1	1	0	4
2.5	मनोविश्लेषण वाद	1	1	1	0	0	0	1	2	6
2.6	बुद्धि संकल्पना एवं बुद्धि के सिद्धांत	0	0	1	0	1	2	0	0	4
2.7	बुद्धि का मापन	0	0	0	2	1	0	1	1	5
2.8	बहुबुद्धि सिद्धांत एवं इसके निहितार्थ	0	0	1	0	0	0	1	2	4
	Total Questions	**1**	**2**	**6**	**6**	**5**	**5**	**4**	**6**	**35**

2.1 व्यक्तिगत विभिन्नताएं : अर्थ प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक

50. व्यक्तिगत भेद पाए जाते हैं

(अ) बुद्धि स्तर में (Intelligence)
(ब) अभिवृत्ति में (Attitudes)
(स) गतिवाही योग्यता में (Motor Ability)
(द) उपर्युक्त सभी में

Ans. : (द) (REET 2015-16, L1)

जब दो बालक विभिन्न समानताएं रखते हुए भी आपस में भिन्न व्यवहार करते हैं तो इसे 'वैयक्तिक भिन्नता' कहा जाता है। वैयक्तिक भिन्नता से अभिप्राय है कि प्रत्येक व्यक्ति में जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक अन्तर पाया जाना। व्यक्तिगत भिन्नता के क्षेत्रों को दो वर्गों

में बांटा जा सकता है अंतरा-वैयक्तिक (Intrapersonal differences) क्षेत्र, और अंतर-वैयक्तिक (Interpersonal differences) क्षेत्र।

51. व्यक्तिगत भेद (Individual difference) में हम पाते हैं-

(अ) विचलनशीलता (Variability) (ब) प्रतिमानता (Normality)
(स) दोनों (अ) और (ब) (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. : (स) (REET 2015-16, L2)

व्यक्तिगत भेद के किसी शीलगुण के प्राप्तांकों का यदि एक आवृत्ति वितरण वक्र बनाया जाए तो यह लगभग एक घंटाकार वक्र के सदृश होता है। इस वक्र को सामान्य वक्र (normal curve) कहा जाता है। ऐसा वक्र अपने केन्द्रीय मूल्य या माध्य के दोनों ओर सममित आकार का होता है।

- *प्रतिमानता (Normality) - जनसंख्या में शीलगुण के प्राप्तांक इस प्रकार वितरित होते हैं कि अधिकांश लोगों के प्राप्तांक वितरण के मध्य क्षेत्र में रहते हैं। बहुत कम लोगों के प्राप्तांक बहुत अधिक या बहुत कम होते हैं।*

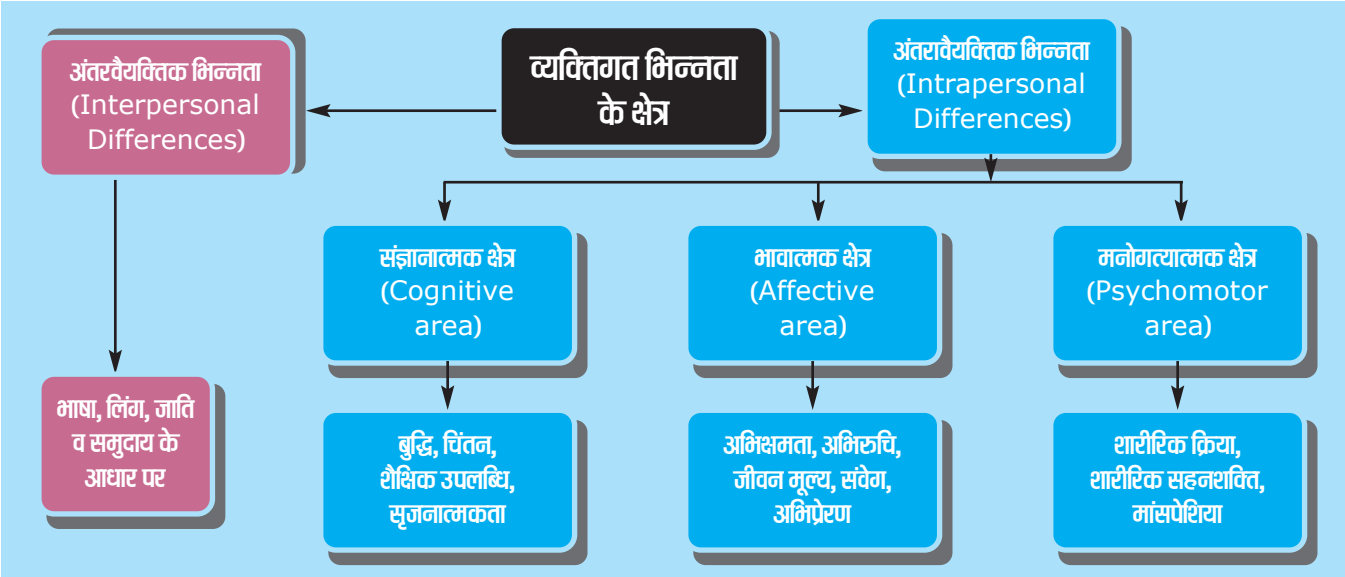

- *विभिन्नता या विचलनशीलता (Variability) - कोई भी दो शीलगुण, दो व्यक्तियों में समान नहीं पाये जाते है।*
- *व्यक्तिगत भिन्नता के मूल शीलगुण बुद्धि लब्धि का सामान्य वक्र*

52. एक अध्यापक किसी भी समूह में समुदाय आधारित व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझ सकता है:

(अ) आंखों के संपर्क के आधार पर
(ब) बुद्धि के आधार पर
(स) भाषा एवं अभिव्यक्ति के आधार पर
(द) गृह कार्य के आधार पर

Ans. : (स) (RTET 2012-13, L1)

53. प्रजातिगत व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझने में निम्न में से सबसे अधिक योगदान देता है-

(अ) मूल्य व्यवस्था
(ब) शाब्दिक एवं अशाब्दिक सम्प्रेषण
(स) अधिगम की प्रक्रियाएं एव विभिन्न व्यवस्थाएं
(द) बुद्धि

Ans. : (द) (RTET 2012-13, L2)

*मनोवैज्ञानिकों के लिए व्यक्तिगत भिन्नता का अर्थ है व्यक्तियों की विशेषताओं तथा व्यवहार के स्वरूपों में पाया जाने वाला वैशिष्ट्य तथा विचलनशीलता। व्यक्तियों की पारस्परिक भिन्नता जानने में **बुद्धि एक मुख्य संदर्भ** है इसके बाद अभिक्षमता, अभिरुचि, व्यक्तित्व और मूल्य का स्थान है।*

54. व्यक्तिगत विभिन्नताओं से सम्बन्धित निम्न में से कौन-सा

व्यक्तिगत विभिन्नताओं की समझ और पहचान

क्रम संख्या	व्यक्तिगत भिन्नता का प्रकार	पहचान का आधार
1.	प्रजातिगत भिन्नता	बुद्धि, शारीरिक संरचना और संस्कृति
2.	सामुदायिक भिन्नता	भाषा, अभिव्यक्ति और रीति रिवाज
3.	जातिगत भिन्नता	कार्य विभाजन, कार्य विशिष्टकरण, रहन सहन, खान-पान इत्यादि
4.	लिंग के आधार पर भिन्नता	शारीरिक संरचना, रुचियां और कौशल
5.	मनोवैज्ञानिक शील गुणों की भिन्नता	परीक्षण और केस स्टडी बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण, अभियोग्यता परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, अभिवृत्ति परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण।

कथन सही है?

(अ) यदि विद्यार्थियो का बुद्धि स्तर समान है तब भी उपलब्धि में विभिन्नता को सकती है।

(ब) सभी बालकों में कुछ भी समानता नहीं होती।

(स) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के वक्र खींच कर दिखाने पर वह एक दिशा की ओर झुक जाता है।

(द) व्यक्तिगत विभिन्नताएं वंशक्रम के कारण होती है।

Ans. : (अ) (RTET 2012-13, L2)

जेम्स ड्रेवरः कोई व्यक्ति अपने समूह के शारीरिक तथा मानसिक गुणों के औसत से जितनी भिन्नता रखता है, उसे व्यक्तिगत भिन्नता कहते हैं।

स्किनरः मापन किए जाने वाला व्यक्तित्व का प्रत्येक पहलू वैयक्तिक भिन्नता का अंश है।

टॉयलरः शरीर के रूप-रंग, आकार, कार्य, गति, बुद्धि, ज्ञान, उपलब्धि, रुचि, अभिरुचि आदि लक्षणों में पाई जाने वाली भिन्नता को वैयक्तिक भिन्नता कहते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि -

- *व्यक्तिगत भिन्नताओं के अंतर्गत किसी एक विशेषता को आधार मानकर हम अंतर स्थापित नहीं करते, बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर अंतर करते हैं।*
- *व्यक्तियों की योग्यताओं, व्यवहारों, और व्यक्तिगत गुणों के मनोवैज्ञानिक मापन में व्यवस्थित परीक्षण की विधियों का उपयोग किया जाता है।*
- *व्यक्तिगत भिन्नता का संबंध केवल व्यक्तित्व के मापनीय पक्ष से है।*
- *व्यक्तिगत भिन्नता सार्वभौमिक है।*
- *दो व्यक्तियों में समानता होते हुए भी वे कभी एक समान नहीं होते।*
- *सामान्यतया सभी मनोवैज्ञानिकों की इस तथ्य पर सहमति है कि व्यक्तिगत भिन्नता आनुवंशिकता (प्रकृति) तथा पर्यावरण (पोषण) की जटिल अंतःक्रिया का परिणाम होती है। आनुवंशिकता द्वारा किसी व्यक्ति के शीलगुणों की परिसीमाएं तय हो जाती हैं और शीलगुणों का विकास उस परिसीमन के अंतर्गत पर्यावरण में उपलभ्य अवलंबों और अवसरों द्वारा निर्धारित होता है।*

55. व्यक्तिगत विभिन्नता का सम्मान करते वक्त, एक शिक्षक से क्या आशा नहीं की जा सकती है?

(अ) योग्यतानुसार समूह में विभक्त करना

(ब) पाठ्यचर्या को समायोजित करना

(स) बच्चों को स्वाध्याय के लिए छोड़ देना

(द) शिक्षण विधियों को समायोजित करना

Ans. : (स) (REET 2017-18, L2)

2.2 व्यक्तित्व संकल्पना व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

56. बाह्य आभास (External Appearance) के आधार पर व्यक्तित्व का वर्णन .....कहा जाता है।

(अ) गहन दृष्टिकोण (Deep View)

(ब) सतही दृष्टिकोण (Surface View)

(स) मानकीय दृष्टिकोण (Normative View)

(द) प्रेक्षणात्मक दृष्टिकोण (Observational View)

Ans. : (ब) (REET 2015-16, L1)

- *सतही दृष्टिकोण (Surface View) : व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के परसोना (Persona) शब्द से हुई है। परसोना का अर्थ कृत्रिम या मिथ्या आभास (Fasle apperance) है। प्रारम्भ में व्यक्तित्व सम्बन्धी अवधारणा इसी पर आधारित थी। व्यक्ति की बाहरी वेशभूषा, बाहरी आभास एवं शारीरिक बनावट को ही व्यक्तित्व का नाम दिया गया जबकि वास्तविक स्थिति इससे भिन्न है। इस विचारधारा को सतही दृष्टिकोण (Surface View) का नाम दिया जा सकता है। इस दृष्टिकोण का आशय स्पष्ट है कि व्यक्ति जैसा लगता है वही उसका व्यक्तित्व (Personality is as one appears) है। वाटसन तथा शरमैन आदि ने इसी मत का समर्थन किया है।*
- *व्यक्तित्व की व्याख्या के लिए दूसरा दृष्टिकोण सामने आया उसे तात्विक दृष्टिकोण (Substance/ deep view) कहते है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के आन्तरिक गुणों को महत्व देता है। वारेन एवं कारमाइकल इसके समर्थक है। इनके अनुसार विकास की किसी भी अवस्था में व्यक्ति का समग्र मानसिक संगठन ही उसका व्यक्तित्व है। इसमें व्यक्ति के चरित्र के सभी आयाम, बुद्धि, स्वभाव, कौशल, नैतिकता एवं अभिवृत्तियां इत्यादि, जो कि विकासात्मक प्रक्रियाओं के कारण प्रदर्शित होती है, सम्मिलित हैं।*

57. व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है। व्यक्तित्व की परिभाषा दी है-

(अ) मूर्रे (ब) जे. बी. वाटसन

(स) जी.डब्ल्यू. आलपोर्ट (द) स्किनर

Ans. : (स) (RTET 2012-13, L2)

जी.डब्ल्यू. आलपोर्ट की परिभाषा से व्यक्तित्व की अधोलिखित विशेषताएं स्पष्ट होती हैं-

- *इसके अंतर्गत शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही घटक होते हैं।*
- *किसी व्यक्ति विशेष में व्यवहार के रूप में इसकी अभिव्यक्ति पर्याप्त रूप से अनन्य होती है।*

- *इसकी प्रमुख विशेषताएं साधारणतया समय के साथ परिवर्तित नहीं होती हैं।*
- *यह इस अर्थ में गत्यात्मक होता है कि इसकी कुछ विशेषताएं आंतरिक अथवा बाह्य स्थितिपरक मांगों के कारण परिवर्तित हो सकती हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व स्थितियों के प्रति अनुकुलनशील होता है।*

58. **नृत्य, ड्रामा एवं शिल्पकला का प्रयोग किया जाता है-**

(अ) विशिष्ट गुणों के विकास हेतु

(ब) व्यक्तित्व को ढालने के लिए

(स) दबी एवं बर्दाश्त नहीं की जा सकने वाले अंतर्नोद के प्रकटीकरण हेतु

(द) इनमें से सभी

Ans. : (द) (RTET 2012-13, L1)

2.3 व्यक्तित्व के प्रकार

59. **व्यक्तित्व का पहला प्रकारात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया।**

(अ) मन्न ने

(ब) शेल्डन ने

(स) हिप्पोक्रेट्स ने

(द) केटल ने

Ans. : (स) (REET 2015-16, L1)

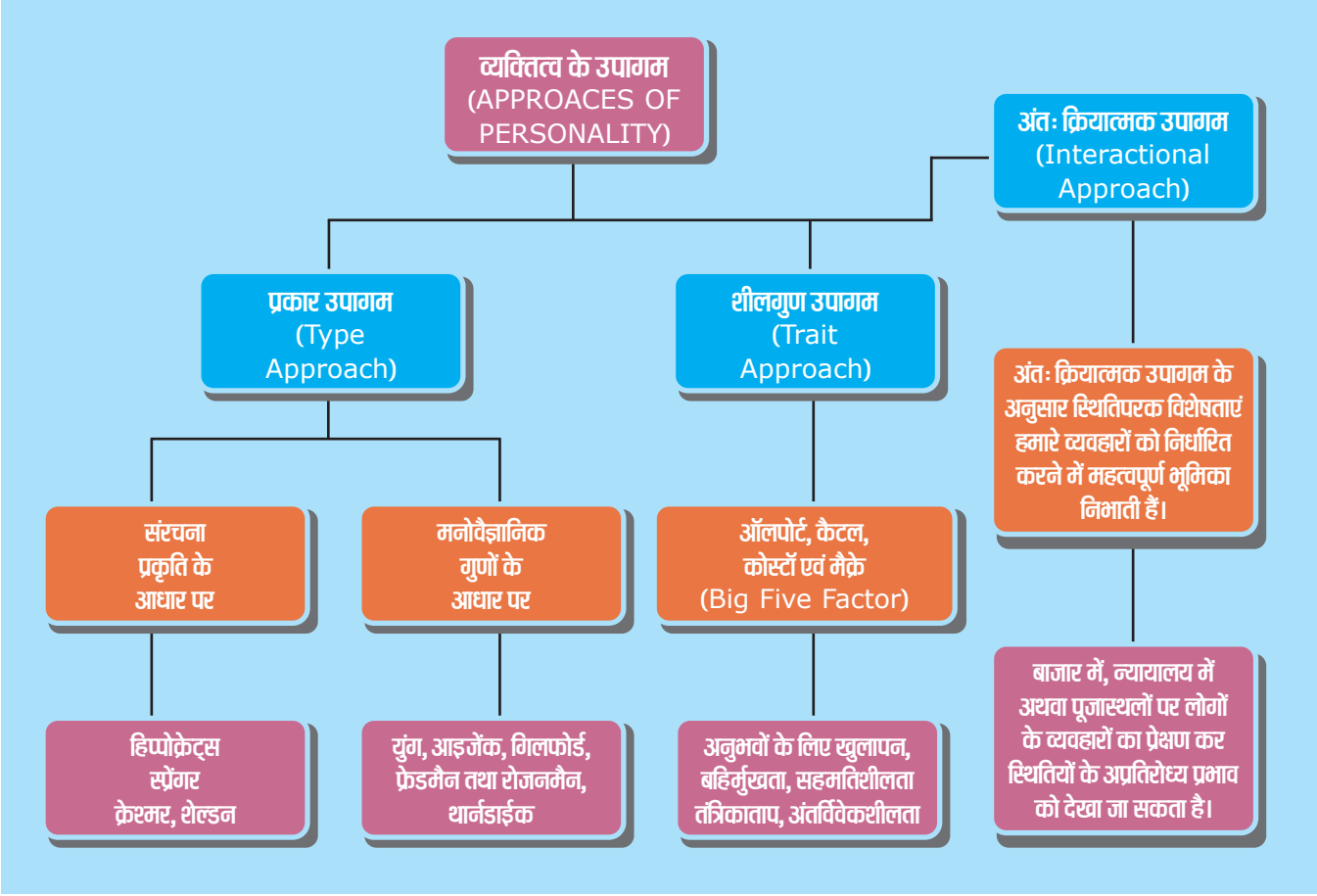

अंतःक्रियात्मक उपागम (Interactional approach) के अनुसार स्थितिपरक विशेषताएं हमारे व्यवहारों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। लोग स्वतंत्र अथवा आश्रित प्रकार का व्यवहार करेंगे यह उनके आंतरिक व्यक्तित्व विशेषक पर निर्भर नहीं करता है बल्कि इस पर निर्भर करता है कि किसी विशिष्ट स्थिति में बाह्य पुरस्कार अथवा खतरा उपलब्ध है कि नहीं। भिन्न-भिन्न स्थितियों में विशेषकों को लेकर संगति अत्यंत निम्न पाई जाती है। बाजार में, न्यायालय में अथवा पूजास्थलों पर लोगों के व्यवहारों का प्रेक्षण कर स्थितियों के अप्रतिरोध्य प्रभाव को देखा जा सकता है।